हिंदी पाठ्यपुस्तक-6

1. उठो धरा के अमर सपूतो

उच्चारण आधारित

- **शुद्ध लिखो और बोलो–** स्फूर्ति, ज्योति, सुमनों, निर्माण, ध्वनियों, सुनहरी।

पाठ आधारित

- **मौखिक**

1. इस कविता के रचनाकार द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी हैं।
2. सुमनों में मुस्कान भरने के लिए कहा जा रहा है।
3. गुन-गुन की ध्वनि भौंरे करते हैं।
4. धरती माँ की काया नई सुनहरी हो रही है।
5. सरस्वती के पावन मंदिर का रक्षक और पुजारी हर बालक है।

- **लिखित**

1. कविता में धरा के अमर सपूतों से पुनः नया निर्माण करने के लिए कहा जा रहा है।
2. विहग डाल-डाल पर बैठकर नए स्वरों में गाते हैं।
3. नूतन वीणा में नया राग, नवगान भरने के लिए कवि कह रहा है।
4. कविता में सरस्वती का मंदिर पावन बताया गया है।
5. कवि नवयुग का आह्वान करने के लिए कह रहा है।

- **प्रत्यास्मरण**

1. सरस्वती का मंदिर विद्यालय को कहा गया है।
2. बालकों को सरस्वती के मंदिर का रक्षक और पुजारी बताया है।
3. बालकों को ज्ञान का दीप जलाकर नवयुग का आह्वान करने को कहा गया है।

- **अपनी समझ से**

1. (ग) अमर सपूतों से
2. (ख) नवीन
3. (ख) भौंरे
4. (ख) हर बालक
5. (ख) शत-शत

- **सोच-समझकर**

1. अमर सपूत बनकर हम अपने देश के लिए हमेशा तैयार रहेंगे, अपने कर्तव्यों का पालन करेंगे और बलिदान से कभी नहीं डरेंगे।
2. भारत देश के नवनिर्माण के लिए देशवासियों को अपनी मातृभूमि की रक्षा करनी होगी, देश के लिए तन-मन-धन से समर्पित रहना होगा और देश को उन्नति के मार्ग पर ले जाने के लिए प्रयास करने होंगे।

- **भाव चर्चा**

1. "पुनः नया निर्माण करो" पंक्ति का भावार्थ है कि देश के युवाओं को नई ऊर्जा और सोच के साथ उठकर समाज और राष्ट्र का नवनिर्माण करना चाहिए, पुरानी बुराइयों को छोड़कर सकारात्मक बदलाव लाना चाहिए और हर व्यक्ति के जीवन में नई उम्मीद और खुशहाली भरनी चाहिए। यह कवि द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी द्वारा युवाओं को देश के भविष्य के लिए सक्रिय योगदान देने का एक प्रेरणादायक आह्वान है।
2. "नई-नई मुस्कान भरो" पंक्ति का भावार्थ है कि देश के युवाओं को पुरानी निराशा और उदासी को त्यागकर, नई सोच, ऊर्जा और उमंग के साथ देश के नागरिकों (मुरझाए फूलों) के चेहरों पर खुशी और आशा की मुस्कान लानी चाहिए, ताकि एक नए, समृद्ध और विकसित युग का निर्माण हो सके। यह पंक्ति देश के नवनिर्माण और सकारात्मक बदलाव लाने का आह्वान करती है।
3. "नया राग, नव गान भरो" पंक्ति का भावार्थ है कि नए युग के आसमान पर नए विचारों, नई सोच और नई ऊर्जा के साथ देश के पुनर्निर्माण में लग जाओ, पुराने अंध-विश्वासों और आलस्य को त्यागकर जीवन में नया उत्साह और नई प्रेरणा भरो, जिसका अर्थ है कि नई दुनिया के लिए नया संगीत और नई धुन रचो, जिसका श्रेय द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी की कविता को जाता है।
4. "गुंजित जग उद्यान करो" पंक्ति का भावार्थ है कि कवि चाहता है कि कविताओं, अच्छे विचारों और मंगलमय ध्वनियों से पूरे संसार रूपी बगीचे (जग-उद्यान) को गूँजने, सुंदर और सकारात्मक बना दिया जाए, ताकि देश के युवा नई ऊर्जा और उत्साह के साथ उठकर देश का निर्माण करें।

5. इस पंक्ति का अर्थ है कि समय-समय पर जो पुराने और मुरझाए फूल (सुमन) होते रहे हैं, उनमें नई-नई मुस्कानें और खुशियाँ भरनी चाहिए। यानि पुराने दु:खों और कठिनाइयों को छोड़कर नए उत्साह और उमंग के साथ जीवन को सजाना चाहिए।

- **रिक्त स्थान पूर्ति**

1. जीवन
2. अमर
3. डाल-डाल
4. वीणा
5. दीपक।

- **पाठ से आगे (मन के विचार)**

1. यदि हमको देश के विकास कार्यों के लिए प्रोत्साहित किया जाता है तो हम सबसे पहले संकल्प लेंगे कि जिम्मेदार नागरिक होने के नाते देश के विकास में योगदान से पीछे न हटूँ। अपने देश के विकास के लिए मैं एक जिम्मेदार नागरिक बनकर शिक्षा, स्वच्छता और स्वदेशी को बढ़ावा देकर योगदान दूँगा। जहाँ मैं ईमानदारी से अपने कर्तव्यों का पालन करूँगा, बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा दिलाऊँगा और आत्मनिर्भर भारत के तहत स्थानीय उत्पादों को प्राथमिकता दूँगा, साथ ही डिजिटल साक्षरता और पर्यावरण के लिए जागरूकता फैलाऊँगा, ताकि छोटे-छोटे प्रयास मिलकर देश को प्रगति की ओर ले जा सकें।
2. नव-निर्माण से भारत का भविष्य उज्ज्वल और सशक्त होगा, जहाँ डिजिटल क्रांति, तकनीकी आत्मनिर्भरता, आर्थिक महाशक्ति और सामाजिक समरसता के साथ विकसित भारत के लक्ष्य को हासिल किया जायेगा, जिससे हर नागरिक को शिक्षा, स्वास्थ्य और समान अवसर मिलेंगे, यह युवा शक्ति, नवाचार और सामूहिक प्रयासों पर आधारित एक 'आत्मनिर्भर' और वैश्विक नेतृत्व वाला राष्ट्र होगा, जो चुनौतियों (जैसे- गरीबी असमानता) को अवसरों में बदल देगा।

- **भाषा आधारित**

1. व्यक्तिवाचक संज्ञा - सरस्वती,
   जातिवाचक संज्ञा - पुजारी, सपूत, धरती, धरा, फूल, रक्षक, बालक।
   भाववाचक संज्ञा - मुस्कान।

2.

शब्द	**विलोम शब्द**
रक्षक	भक्षक
अशुभ	शुभ
सजीव	निर्जीव
मृत्यु	जन्म
निराशा	आशा
अज्ञान	ज्ञान

3. अनेक शब्द के लिए एक शब्द–
   (क) अमर,
   (ख) रक्षक/सैनिक
   (ग) चित्रकार
   (घ) कवयित्री।
4. धीरे-धीरे, बार-बार, रोते-रोते, कुछ-कुछ, पल-पल, साथ-साथ।

5.

विशेषण	**विशेष्य**
वीर	सपूतो
क्षीण	प्राण
सुनहरी	किरण
नव	निर्माण
सुंदर	वीणा
भव्य	मंदिर

5. **शब्दों के तुकान्त**
   करो – धरो, मरो
   पाते – खोते
   उधर – इधर
   हमारी – तुम्हारी
   माया – छाया
   सावन – मनभावन

- **कल्पना आधारित**

1. यदि इस सृष्टि में पशु-पक्षी न होते, तो पृथ्वी एक नीरस, असंतुलित और निर्जीव स्थान बन जाती; खाद्य-शृंखला टूट जाती, परागण रुक जाता जिससे फसलें नष्ट होतीं, कचरा-प्रबंधन मुश्किल होता और प्राकृतिक सौन्दर्य और जैव-विविधता खत्म हो जाती, जिससे मानव जीवन भी कठिन और अंतत: असंभव हो जाता, क्योंकि ये जीव प्रकृति के संतुलन और हमारे अस्तित्व के लिए अनिवार्य हैं।
2. अगर पेड़-पौधे बोल पाते, तो दुनिया अद्भुत और थोड़ी डरावनी भी होती; वे हमें

ऑक्सीजन, फल और छाया देने के बदले अपनी पीड़ा (काटने का दर्द) बताते, हमें प्रदूषण रोकने को कहते और जीवन का असली मतलब सिखाते, जिससे शायद हम प्रकृति के करीब आते और वनों की कटाई रुक जाती, लेकिन हर डाल-पत्ती की चीख से हमारी शांति भंग हो जाती और हमें उनकी जरूरतों (जैसे– कचरा नहीं, खाद चाहिए।) को समझना पड़ता, जिससे हम धरती के साथ एक गहरा रिश्ता बनाते।

2. आराध्या

उच्चारण आधारित

- **शुद्ध लिखो और बोलो–** प्रारंभिक, शौवलर, किलोमीटर, हिम्मत, उज्ज्वल, आकांक्षा।

पाठ आधारित

- **मौखिक**

1. मौसम ठंडा होने पर आराध्या अपनी पहिये वाली कुर्सी को बालकनी में ले जाती थी।
2. आराध्या को स्कूल से लाने के लिए मम्मी जाती थी।
3. आराध्या की गोद में आकर पक्षी गिरा था।
4. स्कूल में विभिन्न प्रकार के व्यायाम और बोलना आराध्या को सिखाया जाता था।
5. बतख शौवलर प्रजाति की थी।

- **लिखित**

1. आराध्या के हाथ-पैर कमजोर थे, इसलिए बच्चों के साथ खेल नहीं सकती थी।
2. आराध्या धीरे-धीरे चलने के साथ हाथों से पेन, ब्रश या चम्मच जैसे सामान पकड़ना सीख गई थी।
3. नाश्ता करने के बाद आराध्या सहेली को टोकरी में लिटाकर अपने स्कूल के लिए तैयार होने चली गई।
4. आराध्या ने बतख को गोद में बैठाकर दूध पिलाया, बतख का नाम सहेली रखा। सहेली को टोकरी में सूखी घास रखकर सुलाया, पहले सहेली को नाश्ता कराया और बाद में खुद नाश्ता किया यानी कि सहेली (बतख) की आत्मीयता के साथ देखभाल की।
5. नहर के पानी में छोड़ने पर बतख (सहेली) धीरे-धीरे तैरने लगी और फिर पंख फड़फड़ाकर पानी में उछलने लगी। बतख तैरते-तैरते दूर निकल गई।

- **प्रत्यास्मरण**

1. सहेली बतख का नाम था।
2. ठीक होने के बाद सहेली घर में एक कमरे से दूसरे कमरे में उड़ती रहती थी।
3. आराध्या के पिताजी उसे नहर के पास वाले पार्क में ले गए।
4. बच्चे बहुत देर तक उसे तैरते हुए देखते रहे।

- **अपनी समझ से**

1. (घ) अप्रैल
2. (ग) बारह वर्ष
3. (क) हरा
4. (ग) छः
5. (ख) बतख

- **सोच-समझकर**

1. यदि आराध्या के स्थान पर मैं होता/होती तो घायल बतख को त्वरित क्रिया करते हुए घावों पर दवाई लगाता/लगाती। ठीक होने पर उसे अपने घर पालता/पालती, जिससे मुझे ऐसा लगता कि मैं जीव-जंतुओं की सेवा कर रहा/रही हूँ।
2. आराध्या के पापा यदि बतख को नहर के पानी में नहीं छोड़ते तो घर में बंदिश महसूस करती। आराध्या के पिता बतख को नहर के स्थान पर जंगल में छोड़ते तो सहेली का जीवन सुरक्षित नहीं रहता। बतख ऊँचा उड़ नहीं सकती, इसलिए अन्य जंगली जानवर बतख को मार सकते थे।

- **पंक्तियों पर चर्चा**

1. **आशय –** स्नेह और प्यार को जीव-जंतु भी समझते हैं। घायल बतख जब आसमान से आराध्या की गोदी में गिरी और आराध्या के क्रियाकलपों को महसूस किया तो निर्भय होकर, दूध पीने के बाद आराध्या की गोद में ही लेट गई।
2. **आशय –** बचपन अल्हड़ होता है लेकिन बच्चे भी एक-दूसरे के मनोभावों को समझते

हैं। कॉलोनी में आराध्या को आये छः माह बीत गये परन्तु उसका कोई दोस्त नहीं था। बतख 'सहेली' और आराध्या के बीच अपनेपन को देखते हुए कॉलोनी के बच्चे भी घर आने लगे। धीरे-धीरे सभी दोस्त बन गए।

- **सही मिलान**

(क) (iv) आराध्या,
(ख) (iii) बतख,
(ग) (i) अंजू,
(घ) (ii) बंटी।

- **सही-गलत**

1. (✗), 2. (✗), 3. (✓), 4. (✗)।

- **पाठ से आगे (मन के विचार)**

1. यदि हमें कोई घायल पक्षी या जानवर मिलेगा, तो सबसे पहले अपनी सुरक्षा की दृष्टि से दस्ताने पहनेंगे और उसे धीरे उठाकर हवादार छेद वाले डिब्बे (जैसे– जूते का डिब्बा) में रखेंगे, उसे खाने-पीने अथवा दवा नहीं देंगे, क्योंकि हमारे अल्पज्ञान से पशु-पक्षी को नुकसान हो सकता है। इसलिए हम तुरंत किसी स्थानीय पशु-चिकित्सक या वन्यजीव बचाव केन्द्र से सम्पर्क करेंगे ताकि वे सही इलाज और पुनर्वास के लिए मार्गदर्शन कर सकें।
2. गर्मियों में प्रवासी पक्षी ठंडे प्रदेशों में इसलिए जाते हैं ताकि उन्हें प्रजनन के लिए अनुकूल और सुरक्षित जगह मिल सके, जहाँ भोजन (कीड़े-मकोड़े, फल) प्रचुर मात्रा में, घोंसला बनाने के लिए पर्याप्त और सुरक्षित जगह मिलें और लंबी धूप के कारण चूजों को पालने के लिए ज्यादा समय मिले, जहाँ सर्द मौसम में गर्म स्थानों की तुलना में संसाधनों के लिए प्रतिस्पर्धा कम होती है। वे असल में ठंडी जगहों (उत्तरी गोलार्ध) में सर्दियाँ बिताने के लिए गर्म जगहों (जैसे भारत) की ओर आते हैं और गर्मी आने पर वापस अपने ठंडे मूल स्थानों पर लौट जाते हैं।

   संक्षेप में, पक्षी गर्मियों में ठंडे स्थानों पर जाकर अपनी आबादी बढ़ाते हैं और सर्दी आने पर भोजन व आश्रय के लिए गर्म स्थानों की ओर प्रवास करते हैं, फिर गर्मी आते ही वापस अपने प्रजनन स्थलों पर लौट आते हैं।

- **भाषा आधारित**

उद्देश्य	विधेय
(क) सूरदास	हिंदी के कवि थे।
(ख) अंजू	बाजार जायेगी।
(ग) छवि	पुस्तक पढ़ रही है।
(घ) शिवाका	मिठाई खा रही है।
(ङ) प्रवीन	खाना खा रहा है।

2. (क) अंजू पुस्तक पढ़ेगी।
   (ख) अमृतांश कल बाजार जायेगा।
   (ग) रीमा चावल पकायेगी।
   (घ) श्वेतांक विद्यालय जायेगा।
   (ङ) रवीना दूध पीयेगी।

- **कल्पना आधारित**

1. पक्षियों को उड़ते समय सचमुच आनंद का अनुभव होता है। प्रकृति ने उन्हें उड़ने के लिए पंख दिये हैं। इन पंखों की मदद से उनकी उड़ने की प्रसन्नता देखते ही बनती है। पक्षियों का शरीर उड़ने के लिए अनुकूलित होता है। अगर मैं एक पक्षी होता, तो मैं सूर्यास्त तक चमकीले आकाश में ऊँचाई पर उड़ना और सूरज को समुद्र में डूबते देखना पसंद करता। मैं लोगों की नजरों से छिपकर तरह-तरह के पेड़ों से फल खाता। मैंने हमेशा बादलों पर सोने का सपना देखा है, हालाँकि मुझे पता है कि यह इंसानों के लिए मुमकिन नहीं है। इसलिए, अगर मुझे एक दिन के लिए भी पक्षी बनने का मौका मिले, तो मैं बादलों में थोड़ी देर के लिए झपकी लूँगा। मैं आसमान में उडूँगा, शाम के रंगों का आनन्द लूँगा और रात तक अपने घोंसले में लौट आऊँगा।
2. यदि बादल पानी बरसाना बंद कर दे, तो प्रकृति एक भयावह सूखे और बंजर परिदृश्य में बदल जायेगी, जहाँ नदियाँ सूख जायेंगी, हरियाली खत्म हो जायेगी, जीव-जंतु प्यास से मर जायेंगे और पृथ्वी का तापमान बहुत बढ़ जायेगा, जिससे अकाल और पारिस्थितिक तंत्र का पतन होगा, जिससे जीवन असंभव हो जायेगा।

बारिश न होने से पृथ्वी की हरियाली खत्म हो जायेगी। पानी की कमी के चलते सभी जीव-जंतुओं का नष्ट होना निश्चित है। ऐसी स्थिति खाद्यान्न संकट पैदा करेगी, अकाल पड़ेगा और मानव जीवन खतरे में पड़ जायेगा।

संक्षेप में, बादलों का पानी बरसाना बंद करना प्रकृति के लिए मृत्यु के समान होगा, जिससे पृथ्वी एक निर्जन और शुष्क ग्रह में बदल जायेगी, जहाँ जीवन मुश्किल हो जायेगा।

- **खेल-आधारित (बुद्धि-परीक्षण)**

1. चुप्पी 2. कड़वी जुबान।

3. अनोखा खेल

उच्चारण आधारित

- **शुद्ध लिखो और बोलो–**

आत्मीय, हास्योत्पादक, चातुर्य, विस्मित, उत्फुल्लता, निर्दयी।

पाठ आधारित

- **मौखिक**

1. बालक और बालिका गंगा तट पर खिलवाड़ कर रहे थे।
2. भाड़ बालिका बना रही थी।
3. मनोहर नौ वर्ष का था।
4. सुरबाला द्वारा बनाये गये भाड़ में से धुआँ कहाँ से निकलेगा? यह कमी रह गई।
5. निर्जन प्रदेश में सूरज महाराज गुलाबी-गुलाबी हँसी हँस रहे थे।

- **लिखित**

1. सुरबाला अपने एक पैर पर रेत जमाकर और थोप-थोपकर एक भाड़ बना रही थी।
2. बालिका सुरबाला भाड़ बनाते-बनाते सोचती भी जाती थी– उसके ऊपर एक कुटी बनाऊँगी। वह मेरी कुटी होगी और मनोहर?...................... नहीं-नहीं वह कुटी में नहीं रहेगा। बाहर खड़ा-खड़ा भाड़ में पत्ते झोंकेगा। जब वह हार जायेगा, बहुत कहेगा, तब ही उसे अपनी कुटी के भीतर आने दूँगी।
3. सुरबाला ने दो-एक पक्के हाथ भाड़ पर लगाकर देखे– भाड़ पूरी तरह से बन गया था। माँ जिस सतर्कता और सावधानी के साथ अपने नवजात शिशु को बिछौने पर लिटाने को छोड़ती है, ठीक वैसे ही सुरबाला ने अपना पैर धीरे-धीरे भाड़ के नीचे से खींचा।
4. सुरबाला अपने भाड़ को बनाने में अटकी हुई है। मनोहर ने आव देखा न ताव बस जोर से एक लात में ही भाड़ का काम तमाम कर दिया। मानो उसने बहुत बड़ी जीत हासिल कर ली और गर्व से चिल्लाया– "सुर्रो रानी!" सुर्रो रानी चुपचाप खड़ी थी, दिल वेदना से भर गया। जिस भाड़ को उसने अपने हाथों से बनाया था और उसकी सुंदरता जिसे दिखाना चाहती थी, उसी ने भाड़ को तोड़ दिया। मनोहर के इस काम से सुरबाला व्यथित हो गयी।
5. मनोहर द्वारा बनाए भाड़ को सुरबाला ने तोड़ दिया। मनोहर अंजलि में गंगाजल लाकर भाड़ का अभिषेक करना ही चाहता था कि सुर्रो रानी ने एक लात से भाड़ के सिर को चकनाचूर कर दिया।
   भाड़ को तोड़ते ही सुरबाला खुशी से नाच उठी और प्रसन्नता के साथ मनोहर भी कहकहा लगाने लगा, क्योंकि वह सुर्रो रानी को खुश देखना चाहता था।

- **प्रत्यास्मरण**

1. बालिका ने एक-दो पक्के हाथ भाड़ पर लगाकर देखे– भाड़ अब पूरी तरह से बन गया था।
2. माँ जिस सतर्कता और सावधानी से अपने नवजात शिशु को बिछौने पर लिटाती है, ठीक वैसे ही सुरबाला द्वारा भाड़ के नीचे से पैर खींचने की क्रिया को बताया गया है।
3. बालिका प्रसन्न होकर नाच उठी क्योंकि पैर साफ निकालने पर भाड़ ज्यों का त्यों टिका रहा।
4. बालिका मनोहर को बेवकूफ लड़का मानती है, क्योंकि वह पानी से उलझ रहा है। सुरबाला द्वारा बनाया गया कारीगरीपूर्ण भाड़ नहीं देखता।

- **अपनी समझ से**

1. (ग) लकड़ी से
2. (ग) दोनों
3. (घ) सात वर्ष
4. (ख) जैनेन्द्र कुमार
5. (ख) नौ वर्ष

- **सोच-समझकर**

1. मेरे सपनों का घर सिर्फ एक इमारत नहीं होगा। मेरे लिए प्राकृतिक माहौल में एक ऐसा स्थान होगा, जहाँ मैं शांतिपूर्ण अध्ययन कर सकूँ। मैं हरे-भरे खेतों के बीच बसे एक शांत घर की कल्पना करता हूँ, जहाँ पत्तों की हल्की सरसराहट और पक्षियों की चहचहाहट प्रकृति का एक अनूठा संगम रचती है।
2. गंगा को भारत की पवित्र नदी इसलिए माना जाता है क्योंकि धार्मिक रूप से यह देवी का स्वरूप है। जो पापों का नाश करती है और मोक्ष दिलाती है, जबकि वैज्ञानिक रूप से इसके जल में बैक्टीरिया रोधी गुण और ऑक्सीजन सोखने की क्षमता होती है, जिससे यह लंबे समय तक शुद्ध रहती है। इसमें औषधीय खनिज होते हैं जो इसे शुद्ध रखते हैं, जो इसे भारतीय संस्कृति, आध्यात्मिकता और जीवन का केंद्र बनाते हैं। इन सभी कारणों से गंगा नदी भारतीय जनमानस में सिर्फ एक नदी नहीं, बल्कि जीवनदायिनी, पवित्र और पूजनीय माँ के समान है।

- **पंक्तियों पर चर्चा**

1. बालिका सोच रही थी– मनोहर अच्छा है, पर बड़ा चंचल और दंगई है।
2. तब बालिका आनन्दित होकर नाच उठी।
3. सुरबाला ने भाड़ के सिर पर अपनी कुटी भी तैयार कर ली।
4. सुरी .... ओ सुरिया! मैं मनोहर हूँ .... मनोहर! .... मुझे मारती नहीं।
5. कैसे बनाऊँ, बताओ तो।
6. भाड़ को तोड़ते ही सुरबाला रानी हँसी से नाच उठी।

- **रिक्त स्थान पूर्ति**

1. भाड़
2. भाड़ की छत
3. मूक
4. धुएँ का
5. उत्फुल्लता

- **पाठ से आगे**

1. अध्यापक की सहायता से छात्र स्वयं करें।
2. हाँ, मैंने पवित्र नदी गंगा के तट का भ्रमण किया है। सुबह के समय नदी का शांत जल, तट पर चहचहाते पक्षी, मंदिर की घंटियों की ध्वनि और ठंडी हवा ने मन को अद्‌भुत शांति और स्फूर्ति प्रदान की। बहते पानी को देखकर जीवन की निरंतरता और अपनी सारी उलझनों के बह जाने का अहसास हुआ।

- **भाषा आधारित**

1. टिकट (अंग्रेजी) + घर (हिंदी) = टिकटघर
   लाठी (हिंदी) + चार्ज (अंग्रेजी) = लाठीचार्ज
   जेल (अंग्रेजी) + खाना (फारसी) = जेलखाना
   गोता (हिंदी) + खोर (फारसी) = गोताखोर
   थाना (हिंदी) + दार (फारसी) = थानेदार।
2. (क) दंगाई (ख) विदूषक (जोकर)
   (ग) परोपकारी (घ) निर्दयी
   (ङ) निर्जन

- **कल्पना आधारित**

1. छात्र अध्यापक की सहायता से स्वयं करें।
2. लंका पर विजय प्राप्त करने से पूर्व भगवान राम ने रामेश्वरम् में समुद्रतट पर उपलब्ध बालू (रेत) से शिवलिंग का निर्माण किया। पौराणिक कथाओं के अनुसार, जब हनुमान जी कैलाश पर्वत से शिवलिंग लाने में विलंब कर रहे थे, तब शुभ मुहूर्त निकलने के डर से श्रीराम ने अपने हाथों से बालू को एकत्रित करके शिवलिंग (रामलिंगम्) बनाया। इसके बाद, श्रीराम ने मंत्रोच्चार और पूजा के साथ उसकी स्थापना की।
   समुद्र सेतु के निर्माण से पहले, भगवान शिव के प्रति आभार और विजय के आशीर्वाद के लिए राम ने गंधमादन पर्वत के पास एक स्थान चुना। समुद्र के किनारे की पवित्र और नरम रेत (बालू) को एकत्रित करके उसे एक आकार (शिवलिंग के विग्रह) में ढाला गया। उसी स्थान को रामेश्वरम् कहते हैं।

- **खेल आधारित (बुद्धि परीक्षण)**

1. पुस्तक : पढ़ना :: भोजन : खाना
2. आँख : देखना :: झोंपड़ी : सोना
3. पहाड़ : ऊँचा :: नदी : गहरी/लम्बी

4. पद और दोहे

उच्चारण आधारित

- **शुद्ध लिखो और बोलो–** प्रकृति, उत्तम, उज्ज्वल, आशीर्वाद, अभिलाषा, आकर्षण

पाठ आधारित

- **मौखिक**

1. मीरा ने अपना पति गिरधर गोपाल को मान लिया है।
2. सर्पों के लिपटे रहने पर भी चंदन में विष (जहर) नहीं समाता है।
3. कल का काम आज करना चाहिए।
4. कबीर ने अपनी बात कमाल (अपने पुत्र) से कही है।
5. परेशानी में काम आने वाले सच्चे मित्र होते हैं।

- **लिखित**

1. रहीमदास जी के अनुसार बुरे दिनों के समय चुप होकर बैठ जाना चाहिए।
2. मीराबाई ने कुल की इज्जत को छोड़ दिया है।
3. मीराबाई संसार (जगत) देखकर रोने लगती है।
4. कबीर स्वयं को बुरा बतलाते हैं।
5. दूसरों के लिए काँटा बोने वाले के लिए फूल त्रिशूल बन जाते हैं।

- **प्रत्यास्मरण**

संदर्भ एवं प्रसंग – प्रस्तुत पद हमारी पाठ्य-पुस्तक पद एवं दोहे पाठ से लिया गया है। इस पद की रचयिता कृष्ण भक्त कवयित्री मीराबाई हैं। मीराबाई ने श्रीकृष्ण को अपना पति मानकर उनकी भक्ति की है।

व्याख्या – मीराबाई कहती हैं- मेरे तो गिरधर गोपाल अर्थात् श्रीकृष्ण ही सर्वस्व हैं। अन्य किसी से मेरा कोई सम्बन्ध नहीं है। जिस कृष्ण के सिर पर मोर मुकुट है, वही मेरा पति है। मैं श्रीकृष्ण को ही अपना पति (रक्षक) मानती हूँ। इस भक्ति के लिए मैंने अपने माता-पिता, भाई-बन्धु आदि सभी को छोड़ दिया है। मैंने तो अपने वंश परिवार की मर्यादा का भी त्याग कर दिया है, अब मेरा कोई कुछ नहीं कर सकता अर्थात् मुझे किसी की कोई चिन्ता नहीं है। मैंने तो लोकलाज को खोकर संतों के निकट बैठना स्वीकार कर लिया है। साधु-संतों के पास बैठने से यदि लोक-लज्जा जाती है तो भले ही चली जाए, मुझे कोई अन्तर नहीं पड़ता है। मैंने तो आँसुओं रूपी जल से प्रभु-प्रेम रूपी बेल को बोया है। अब तो यह प्रेम बेल फलने-फूलने लगी है और इसमें आनन्द रूपी फल आ रहा है। कवयित्री कहती है कि मैंने दूध की मथनियाँ को बड़े प्रेम से मथा है। इसमें दही को मथकर घी तो निकाल लिया है और छाछ को छोड़ दिया है अर्थात् सार-तत्त्व को तो ग्रहण कर लिया है और सारहीन अंश को छोड़ दिया है। मैं तो भक्तों को देखकर प्रसन्न होती हूँ और संसार के रंग-ढंग देखकर रोती हूँ अर्थात् दुःखी होती हूँ। मीरा अपने प्रभु से प्रार्थना करती है कि मैं तो आपकी दासी हूँ। आप मुझे इस भवसागर से पार उतारिये।

- **अपनी समझ से**

1. (ख) प्रेम बेलि
2. (क) दासी
3. (ख) फूल
4. (क) भूखे को
5. (क) नीके

- **सोच समझकर**

1. मीराबाई के समान ही कई भक्तिन नारियाँ हैं, जिनमें अंडाल (आंडाल) एक प्रमुख नाम है, जिन्होंने भगवान विष्णु (रंगनाथ) को समर्पित होकर प्रेम और भक्ति के पदों की रचना की, सामाजिक बंधनों को तोड़कर 'दिव्य प्रेम' का मार्ग चुना और अपनी कविताओं से अमर हो गईं, जैसे मीरा ने कृष्ण के लिए किया, उन्होंने भी अपनी भक्ति को सर्वोपरि माना और समाज की परवाह किए बिना ईश्वर से एकाकार हो गईं, जो आज भी भक्तों के लिए प्रेरणा स्रोत हैं।

   अंडाल का जीवन मीराबाई के समान ही अटूट विश्वास, सामाजिक प्रतिरोध और दिव्य प्रेम का प्रतीक है, जिन्होंने भक्ति के माध्यम से अपनी पहचान बनाई और अनंत काल तक स्मृतियों में जीवित रहीं।

2. **कबीर दास के दोहे**

1. गुरु गोविंद दोऊ खड़े,
   काके लागूँ पायँ।
   बलिहारी गुरु आपने,
   गोविन्द दियो बताय।।

सीख– गुरु और गोविंद (ईश्वर) दोनों एक साथ खड़े हों तो किसके पैर छुएँ? मैं अपने गुरु पर बलिहारी जाता हूँ, जिन्होंने मुझे ईश्वर का रास्ता दिखाया।

2. तिनका कबहूँ न निन्दिये,
   जो पाँव तर होय।
   कबहूँ उड़ आँखों पड़े,
   पीर घनेरी होय।।

सीख– किसी छोटे तिनके की भी निन्दा नहीं करनी चाहिए, जो पैरों के नीचे पड़ा हो क्योंकि वही तिनका उड़कर आँख में पड़ जाए तो बहुत दर्द होता है।

3. बड़ा हुआ तो क्या हुआ,
   जैसे पेड़ खजूर।
   पंछी को छाया नहीं,
   फल लागे अति दूर।।

सीख– बड़ा होने का क्या फायदा, अगर वह खजूर के पेड़ जैसा हो। वह न तो पंछियों को छाया देता है और न ही उसके फल आसानी से मिलते हैं। यानी, व्यक्ति को बड़ा होकर दूसरों के काम आना चाहिए।

रहीम के दोहे–

1. रहिमन धागा प्रेम का,
   मत तोड़ो चटकाय।
   टूटे से फिर न जुड़े,
   जुड़े गाँठ पड़ जाये।।

सीख– प्रेम के धागे को कभी झटके से नहीं तोड़ना चाहिए। एक बार टूट जाने पर यह दोबारा नहीं जुड़ता और जुड़ भी जाये तो उसमें गाँठ पड़ जाती है।

2. कह रहीम कैसे निभै
   बेर केर को संग।
   वे डोलत रस आपने,
   उनके फाटत अंग।।

सीख– रहीमदास जी कहते हैं कि बेर और केला साथ-साथ नहीं रह सकते हैं वैसे ही सज्जन और दुर्जन साथ-साथ नहीं रह सकते। जब बेर की डाली तो अपने रस में हवा में झूमती है तो केले के पत्तों को फाड़ देती है।

- **भाव चर्चा**

1. इस पंक्ति के माध्यम से मीराबाई कह रही हैं कि मुझे लोक-लाज या समाज की कोई परवाह नहीं है।
2. कबीरदास जी इस दोहे में कहते हैं कि जब मैं दूसरों की बुराई देखने निकला, तो कोई भी बुरा नहीं मिला लेकिन जब मैंने दिल में झाँककर देखा, तो समझ आया कि मुझसे बुरा कोई नहीं है।
3. इस पंक्ति में रहीमदास जी ने मित्र की पहचान बताई है कि जो व्यक्ति संकट के समय में आपका साथ नहीं छोड़ता यानि कि संकट के समय साथ देता है, वही असली मित्र है।
4. रहीमदास के दोहे का भाव यह है कि संसार में हर छोटी-बड़ी वस्तु या व्यक्ति की अपनी उपयोगिता होती है। हमें किसी भी वस्तु या व्यक्ति को छोटा समझकर त्यागना नहीं चाहिए। जीवन में किसी भी छोटी-बड़ी वस्तु की आवश्यकता पड़ सकती है, इसलिए हर एक का सम्मान करना चाहिए।
5. कवि रहीम द्वारा रचित इस पंक्ति का भाव है कि जीवन में एक समय में एक ही मुख्य लक्ष्य या कार्य पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए, जिससे सफलता अवश्य मिलती है। एक साथ कई काम करने से कोई भी कार्य सही नहीं हो पाता।

- **रिक्त स्थानपूर्ति**

1. आनन्द, 2. मीरा, 3. लोई, 4. तिरसूल, 5. कसौटी।

- **पाठ से आगे (मन के विचार)**

1. यदि हम मीराबाई के स्थान पर होते तो वही करते जो मीराबाई के आदर्शों से शिक्षा मिलती है। मीराबाई भक्तियोग की साक्षात् प्रतिमूर्ति थीं। हमारा भी प्रयास आदर्श प्रेम, निस्वार्थ निश्छल प्रेम-भक्ति, ईश्वर के प्रति पूर्ण समर्पण-भाव, एकनिष्ठ समर्पण, एकाग्रचित्त से एक लक्ष्य में मन को विलीन

करते, चित्त की शुद्धता जैसे जीवन मूल्य धारण कर ईश्वर प्राप्ति के मार्ग पर चलते।

2. कबीरदास जी ने दोनों धर्मों के आडम्बर, अंधविश्वास, कर्मकाण्ड, कुरीति और अनाचार का बिना भेद किए समान भाव से प्रतिरोध किया है। कबीर ने हिंदुओं की मूर्तिपूजा का बराबर विरोध किया है। इस विरोध के अनेक तर्क उन्होंने प्रस्तुत किए। उन्होंने जातिगत व्यवस्था का पुरजोर विरोध किया। हम भी इन बुराइयों का विरोध करेंगे।

- **भाषा आधारित**

1. **पर्यायवाची शब्द**
    1. जगत – संसार, दुनिया, विश्व।
    2. तलवारि – कृपाण, असि, शमशीर।
    3. फूल – प्रसून, कुसुम, सुमन।
    4. बेल – लता, लतिका, वल्ली।
    5. पल – क्षण, लम्हा, घड़ी।

2. **उपसर्ग जोड़कर नये शब्द**

उपसर्ग		मूल शब्द		नया शब्द
अप	+	मान	=	अपमान
परा	+	जय	=	पराजय
नि	+	रंजन	=	निरंजन
अति	+	आचार	=	अत्याचार
अध	+	पका	=	अधपका

- **कल्पना आधारित**

1. यदि कबीरदास, ईश्वर चंद्र विद्यासागर, स्वामी विवेकानन्द और राजा राममोहन राय जैसे महान समाज-सुधारक न होते, तो भारत सामाजिक कुरीतियों और अंधविश्वास और अनपढ़ता के गहरे अंधकार में डूबा रहता। सती प्रथा, बाल विवाह, छुआछूत और जातिवाद जैसी कुप्रथाएँ समाज को जकड़े रहतीं, जिससे राष्ट्र का विकास पूरी तरह अवरुद्ध हो जाता और आधुनिक, शिक्षित भारत की कल्पना भी नामुमकिन होती। विद्यासागर के प्रयासों (जैसे- हिंदू विधवा पुनर्विवाह अधिनियम) के बिना, विधवाओं को नारकीय जीवन जीने पर मजबूर होना पड़ता, और सती प्रथा जैसी कुरीतियों के कारण अनगिनत महिलाओं की जान जाती। आधुनिक शिक्षा का प्रसार न होने से अंधविश्वास और रूढ़िवादिता का बोलबाला रहता। राजा राममोहन राय जैसे सुधारकों के बिना तर्कवाद और पश्चिमी शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण रूढ़िवादी बना रहता।
कबीरदास जैसे संतों ने धर्म के नाम पर पाखंड और जातिवाद पर चोट की थी। इनके बिना समाज अछूत प्रथा के कारण गहराई से विभाजित और कमजोर रहता।
स्वामी विवेकानंद ने युवा पीढ़ी को आत्मविश्वास और भारतीय संस्कृति की महानता का बोध कराया, उनके बिना देश औपनिवेशिक मानसिकता में फँसा रहता और धर्म संसद जैसे मंचों पर भारत की बुलंद आवाज न गूँजती।
संक्षेप में, इन सुधारकों के बिना, भारत एक प्रगतिशील और एकीकृत राष्ट्र न बनकर कुप्रथाओं के बोझ तले दबा हुआ एक पिछड़ा समाज बना रहता।

2. भगवान श्रीकृष्ण द्वारा मोर मुकुट धारण करने के पीछे मुख्य कारण प्रकृति से प्रेम, राधा-कृष्ण का प्रेम प्रतीक, मानवीय अहंकार पर विजय का संदेश है। यह मोर पंख भगवान की चंचलता, वृंदावन से जुड़ाव और पवित्रता (ब्रह्मचर्य) का प्रतीक है।

- **खेल आधारित (बुद्धि परीक्षण)**

तो को टा बु ता हि य फू।
तो ल को ल है बा है सू।।
हि ही म ग ति गे, ब न
ब हु हु री।
बि क टी सै, ते साँ मी।।

5. परीक्षा

उच्चारण आधारित

- **शुद्ध लिखो और बोलो–** स्मृति, संध्या, वात्सल्य, कृपादृष्टि, सौभाग्य, कर्मचारियों

पाठ आधारित

- **मौखिक**

1. देवगढ़ रियासत के दीवान का नाम सरदार सुजान सिंह था।

2. आवेदन में सबसे अधिक संख्या वाले ग्रेजुएट लोग थे।
3. किसान की गाड़ी में अनाज भरा हुआ था।
4. प्रात:काल से ही उम्मीदवार अपनी किस्मत का फैसला सुनने का इन्तजार कर रहे थे।
5. 'परीक्षा' कहानी के लेखक प्रेमचन्द हैं।

- **लिखित**

1. दीवान सुजानसिंह ने परमात्मा की याद आने पर महाराज से विनती की कि महाराज अब मेरी अवस्था भी ढल गई है, राजकाज सँभालने की शक्ति नहीं रही। कहीं भूल-चूक हो जाए तो बुढ़ापे में दाग लगे। सारी जिंदगी की नेकनामी मिट्टी में मिल जाएगी। इसलिए दीवान पद से मुक्ति दे दी जाए।
2. 'परीक्षा' कहानी के आधार पर उम्मीदवार अपनी बुद्धि के अनुसार अच्छे रूप में दिखाने की कोशिश करता था। मिस्टर 'अ' नौ बजे दिन तक सोया करते थे परंतु आजकल वे बगीचे में टहलते हुए उषा का दर्शन करते थे। मिस्टर 'द', 'स' और 'ज' से उनके घरों पर नौकरों की नाक में दम था, लेकिन ये सज्जन आजकल 'आप' और 'जनाब' के बगैर नौकरों से बातचीत नहीं करते थे। मिस्टर 'ल' को किताबों से घृणा थी, परन्तु आजकल वे बड़े-बड़े ग्रंथ देखने-पढ़ने में डूबे रहते थे। जिससे बात कीजिए, वह नम्रता और सदाचार का देवता बना मालूम पड़ता था।
3. चोटिल खिलाड़ी ने किसान से कहा, "मैं तुम्हारी गाड़ी निकालने में कुछ मदद कर दूँ।" किसान ने देखा– एक गठे हुए बदन का लम्बा आदमी सामने खड़ा है। झुककर बोला, "हुजूर, मैं आपसे कैसे कहूँ?" युवक ने कहा, "मालूम होता है, तुम यहाँ बड़ी देर से फँसे हो।" अच्छा तुम गाड़ी पर जाकर बैलों को साधो, मैं पहियों को ढकेलता हूँ, अभी गाड़ी ऊपर चढ़ जायेगी।
4. अन्त में दीवान पद के लिए रियासत के पंडित जानकीनाथ-सा को चुना गया।
5. दीवान सुजानसिंह के चरित्र की चार विशेषताएँ –

   1. ईश्वर में आस्थावान – चालीस साल तक दीवान पद को सँभालने के बाद ईश्वर का नाम जपने के लिए स्वत: ही पद त्याग कर दिया। **2. स्वामी भक्ति** – देवगढ़ के महाराज द्वारा दिए गए आदेश का पालन करने के बाद ही दीवान पद का त्याग किया। **3. अनुभवशील एवं नीतिकुशल** – सरदार सुजानसिंह नीतिकुशल एवं अनुभवशील थे, तभी तो दीवान के चुनाव का जिम्मा स्वीकार कर लिया। **4. निपुण पारखी** – सैकड़ों उम्मीदवारों में से पंडित जानकीनाथ का चुनाव बड़ी ही पारखी नजर से किया।

- **प्रत्यास्मरण**

1. सरदार सुजानसिंह देवगढ़ रियासत के दीवान थे।
2. सरदार सुजानसिंह ने चालीस वर्ष महाराज की सेवा की।
3. सरदार सुजानसिंह परमात्मा का ध्यान करने के लिए पद से हटना चाहते थे।
4. राजा सरदार सुजानसिंह का आदर इसलिए करते थे कि वे अनुभवशील एवं नीतिकुशल थे।

- **अपनी समझ से**

1. (घ) परमात्मा की 2. (ख) विज्ञापन
3. (क) मंदाग्नि वाले 4. (ग) दोनों
5. (ग) दोनों

- **सोच-समझकर**

1. यदि घायल खिलाड़ी (सुजानसिंह का छिपा हुआ उम्मीदवार) मदद न करता, तो कीचड़ और चढ़ाई के कारण अनाज से भरी बैलगाड़ी नाले से नहीं निकल पाती। किसान को पूरी रात वहीं फँसे रहना पड़ता, मेहनत व्यर्थ जाती और शायद जानवर भी भूख से थक जाते।
2. देवगढ़ के दीवान पद के लिए योग्य उम्मीदवार खोजने हेतु सरदार सुजानसिंह द्वारा एक महीने की परीक्षा ली गई, जिसमें उम्मीदवारों ने स्वयं को सर्वश्रेष्ठ सिद्ध करने के लिए सुबह जल्दी उठना, पुस्तकें पढ़ना, गरीबों की सहायता करने का नाटक, नम्र व्यवहार और झूठा दिखावा जैसे अनेक प्रयत्न किए।

- **पंक्तियों पर चर्चा**

1. **भावार्थ** – "गहरे पानी में पैठने से ही मोती मिलता है" एक प्रसिद्ध कहावत

है। इसका गहरा अर्थ है कि जीवन की सफलता या मूल्यवान लक्ष्य मेहनत, संघर्ष और जोखिम उठाने के बाद ही हासिल होते हैं। किनारे बैठकर (डरकर) कुछ नहीं मिलता, कठिनाइयों में उतरना ही पड़ता है। यह लोकोक्ति हमें आलस्य और भय को छोड़कर लगातार प्रयास (पुरुषार्थ) करने की प्रेरणा देती है, क्योंकि मेहनत ही जीवन का वास्तविक 'मोती' है।

2. **भावार्थ –** "इन बगुलों में हंस कहाँ छिपा हुआ है?" मुंशी प्रेमचंद की कहानी 'परीक्षा' से ली गई है। इसका भावार्थ है कि साधारण या आडम्बरपूर्ण लोगों (बगुलों) की भीड़ में कोई एक व्यक्ति विशिष्ट प्रतिभा, ईमानदारी और उत्तम गुणों (हंस) वाला है, जिसे अनुभवी व्यक्ति (बूढ़ा जौहरी, सुजानसिंह) परख रहा है। यहाँ बगुले सामान्य, चापलूस या दिखावा करने वाले लोगों का प्रतीक है, जबकि हंस गुणी, शांत और सज्जन व्यक्ति का प्रतीक है। यह पंक्ति एक सूक्ष्म निरीक्षण को दर्शाती है, जहाँ बाहरी व्यवहार के बजाय आंतरिक गुणों (दया, हिम्मत) को महत्त्व दिया जा रहा है।

- **वाक्य किसने किससे कहे**

	किसने कहे?	**किससे कहे?**
1.	सुजानसिंह ने	महाराज से
2.	घायल खिलाड़ी ने	किसान से
3.	युवक ने	किसान से
4.	सरदार सुजानसिंह ने	उम्मीदवारों से

- **रिक्त स्थान पूर्ति**

1. चालीस साल
2. कर्तव्य का अधिक
3. हाथों की सफाई
4. अकेले छोड़कर किसान
5. राजा साहब का दरबार

- **पाठ से आगे (मन के विचार)**

1. यदि मुझे किसी रियासत का दीवान बना दिया जाए, तो मेरा मुख्य उद्देश्य पारदर्शी शासन, समानता और प्रजा-कल्याण होगा। मैं शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं को मुफ्त और सुलभ बनाने, किसानों के लिए बेहतर नीतियाँ, भ्रष्टाचार मुक्त प्रशासन तथा कृषि, व्यावसायिक सुधारों पर जोर दूँगा ताकि राज्य को समृद्ध और आत्मनिर्भर बनाया जा सके।

जनता के लिए मेरी कार्ययोजना –

1. मेरा मुख्य लक्ष्य एक ऐसा 'राम राज्य' स्थापित करना होगा जहाँ प्रजा डरे नहीं, बल्कि राजा दीवान की सलाह से प्रगति करे।
2. यदि मुझे कक्षा का मॉनीटर चुनने को कहा जाए, तो मैं उस बच्चे का चुनाव करूँगा जो पढ़ाई में अच्छा हो, सबसे प्यार से बात करता हो और पढ़ाई तथा काम पूरा करने में दूसरों की मदद करता हो। इसके लिए हम उसे कुछ दिन मॉनीटर का कार्य देकर परख सकते हैं।

- **भाषा आधारित**

1. **शब्दों के पर्यायवाची लिखिए–**
   मुल्क – सूबा, प्रांत, देश
   ग्रंथ – पोथी, पुस्तक, रचना
   साहस – हिम्मत, बहादुरी, वीरता
   किसान – कृषक, हलधर, काश्तकार
   दया – तरस, रहम, कृपा
2. **विग्रह पदों का समास**
   (क) डाकगाड़ी (घ) गुरुदक्षिणा
   (ख) पाठशाला (ङ) हथकड़ी
   (ग) रसोईघर

- **कल्पना आधारित**

1. 'परीक्षा' कहानी में सुजानसिंह द्वारा पंडित जानकीनाथ को नया दीवान घोषित करने के बाद, दरबार में खुशी का माहौल रहा होगा। जानकीनाथ की ईमानदारी और दयालुता के लिए राजा ने उन्हें सम्मानित किया होगा सुजानसिंह का भव्य विदाई समारोह हुआ होगा और प्रजा ने नए दीवान को सहर्ष स्वीकार कर लिया होगा। जानकीनाथ ने पहले दीवान की तरह ही प्रजा की सेवा जारी रखी होगी।
2. मुंशी प्रेमचंद की कहानी 'परीक्षा' में दीवान सुजानसिंह द्वारा निकाला गया विज्ञापन एक क्रांतिकारी कदम था, जिसने पूरे मुल्क में खलबली मचा दी। यह विज्ञापन इस मायने में अनोखा था कि उसमें 'दीवान' जैसे उच्च पद के लिए कोई शैक्षणिक योग्यता या उम्र की सीमा नहीं थी, बल्कि सिर्फ 'सज्जनता' और चरित्र की परीक्षा होनी थी।

- **खेल आधारित (बुद्धि परीक्षण)**

चित्र देखकर छात्र स्वयं हल करें।

6. कमाल की होली

उच्चारण आधारित

- **शुद्ध लिखो और बोलो–**

व्यस्त, तैयारी, दुर्गुणों, तिलांजलि, आश्वासन, तालियाँ।

पाठ आधारित

- **मौखिक**

1. मंच मोहल्ले के खुले मैदान में बनाया गया था।
2. नेताजी होली के कुण्ड में 'झूठे आश्वासन' समर्पित कर देते हैं।
3. प्रेरित अग्निकुंड में 'खाऊ-पिऊ' समर्पित कर देता है।
4. तनिष्का बेढंगे तरीके से काम करना/स्वच्छता की कमी को तिलांजलि देती है।
5. इस पाठ के कार्यक्रम का प्रमुख उद्देश्य बुरी आदतों को होली के बहाने छोड़ना था।

- **लिखित**

1. चिराग भाई साहब से पूछता है कि हमारे आज के मुख्य अतिथि मनदीप सिंह जी कहाँ हैं, अभी तक आए नहीं?
2. होलिका के अग्निकुण्ड में भाई साहब आलस्य समर्पित करते हैं।
3. मालती अग्निकुण्ड में 'बातूनी' की आहुति देती है।
4. प्रेरित के विषय में सौम्य हँसते-हँसते कहता है– चलो, अब तुम्हारे घर में खाद्य संकट कभी दस्तक नहीं देगा।
5. तान्या अग्निकुण्ड में 'चिड़चिड़ापन' लिखा हुआ बैनर डालती है।

- **अपनी समझ से**

1. (ख) भाई साहब
2. (क) होली का
3. (ख) अपनी बुराइयाँ
4. (ख) मनदीप सिंह
5. (क) मालती

- **सोच-समझकर**

1. यदि 'कमाल की होली' कार्यक्रम में मैं शामिल होता तो अग्निकुण्ड में अपने दु:ख-दर्द समर्पित करता।
2. यदि मुख्य अतिथि किसी कारणवश नहीं आ पाते हैं तो कार्यक्रम का माहौल थोड़ा फीका या अव्यस्थित हो सकता है, लेकिन उचित "बैकअप प्लान" के साथ इसे सफल बनाया जा सकता है।

   मुख्य अतिथि के बिना कार्यक्रम पर पड़ने वाले संभावित प्रभाव इस तरह हैं–

   1. शुरुआती हताशा और तनाव – आयोजक टीम में हड़बड़ाहट और तनाव का माहौल बन सकता है, जिसे शांत दिमाग से नियंत्रित करने की आवश्यकता होती है।

   2. वैकल्पिक योजनाओं का क्रियान्वयन– मुख्य अतिथि की जगह किसी वरिष्ठ सदस्य या उप अतिथि द्वारा कार्यक्रम की अध्यक्षता (जैसे-दीप जलाना) की जा सकती है।

   3. कार्यक्रम में बदलाव – हो सकता है कि भाषण का सत्र छोटा हो जाए या उसे किसी अन्य गतिविधि (जैसे-वीडियो स्क्रीनिंग या प्रश्नोत्तर सत्र) से बदल दिया जाए।

   4. औपचारिकता में कमी – कार्यक्रम की औपचारिक गरिमा कम हो सकती है और वह एक अनौपचारिक, अधिक मिलनसार सभा में बदल सकता है।

   5. नकारात्मक प्रभाव – यदि दर्शक मुख्य अतिथि को सुनने आये थे, तो वे निराश हो सकते हैं और कार्यक्रम के आकर्षण में कमी आ सकती है।

   संक्षेप में, बिना मुख्य अतिथि के कार्यक्रम का स्वरूप बदल जायेगा, लेकिन उसे रद्द करने के बजाय उपलब्ध संसाधनों के साथ जारी रखा जा सकता है।

- **पंक्तियों पर चर्चा**

1. होलिका दहन बुराई पर अच्छाई और नकारात्मकता पर सकारात्मकता की जीत का प्रतीक है, जहाँ प्रतीकात्मक रूप से अपने दुर्गुणों (क्रोध, लोभ, ईर्ष्या, नफरत और आलस्य) को अग्नि में स्वाहा कर नई शुरुआत हो सकती है।

इस पंक्ति से कार्यक्रम में शामिल लोगों को अपनी बुराई छोड़ने के लिए प्रेरित किया गया है।

2. डॉक्टर सेवा नंदवाल द्वारा रचित 'कमाल की होली' में "अंदर-बाहर दोनों की सफाई, वह भी बहुत अच्छे ढंग से" का आशय सिर्फ घर के भौतिक परिवेश को साफ करने से नहीं, बल्कि मनुष्य के मन के विकारों को दूर कर, उसे होली के वास्तविक अर्थ– पवित्रता और प्रेम से जोड़ने से है। इसमें शारीरिक वातावरण के साथ-साथ मन की नकारात्मकता को भी साफ करने का संदेश है।

- **सही-गलत**

1. (✗), 2. (✗), 3. (✓), 4. (✓), 5. (✓)।

- **रिक्त स्थान पूर्ति**

1. काम
2. तालियाँ बजाकर
3. गणित
4. होली का
5. तालियाँ

- **पाठ से आगे (मन के विचार)**

1. हरे पेड़ काटने से पर्यावरण पर विनाशकारी प्रभाव पड़ते हैं। यह जलवायु परिवर्तन, ऑक्सीजन में कमी और CO_2 में वृद्धि का मुख्य कारण है। इसके परिणामस्वरूप मृदा अपरदन (मिट्टी कटाव), वर्षा में कमी, वन्य जीवों के आवास का विनाश और बाढ़ जैसी प्राकृतिक आपदाओं का खतरा बढ़ जाता है। बिना पेड़ों वाले क्षेत्रों में बाढ़, भूस्खलन और धूलभरी आँधी की संभावना अधिक होती है। पेड़ों की अंधाधुंध कटाई से पारिस्थितिक संतुलन पूरी तरह बिगड़ सकता है, जो मानव जीवन के लिए भी गंभीर खतरा है।
2. दुर्गुणों (बुरी आदतों, दोषों) को आत्म-चिंतन द्वारा पहचानकर, उन्हें दूर करने के दृढ़ संकल्प, सत्संग, आत्म-संयम (ध्यान, प्राणायाम) और अच्छे विचारों को अपनाकर दूर किया जा सकता है। लगातार अभ्यास से बुरी आदतों को सकारात्मक कार्यों और अच्छी आदतों में बदला जा सकता है, क्योंकि दुर्गुण भलाई के अभाव के कारण उत्पन्न होते हैं।

- **भाषा आधारित**

1. (क) <u>वह</u> राम का घर है।
   (ख) बाहर <u>कोई</u> खड़ा हुआ है।
   (ग) दूध में <u>कुछ</u> गिर गया है।
   (घ) यह <u>मेरी</u> पुस्तक है।
   (ङ) <u>आपके</u> पिताजी क्या करते हैं?

2.

चन्द्रशेखर	चन्द्र है शिखर पर जिसके अर्थात् शिव
दशानन	दस हैं आनन (मुख) जिसके अर्थात् रावण
षडानन	षट् (छः) हैं आनन (मुख) जिसके अर्थात् कार्तिकेय
एकदंत	एक है दाँत जिसका अर्थात् गणेश
चतुर्मुख	चार है मुख जिसके अर्थात् ब्रह्मा

- **कल्पना आधारित**

1. छात्र अध्यापक की सहायता से हल करें।
2. देश के आदर्शों का पालन करता, कानून का सम्मान करता और सिद्धांतों का पालन करता। स्वच्छता बनाए रखता, पर्यावरण के प्रति संवेदनशील होता। अच्छी शिक्षा के प्रति जागरूक होता। समाज के हर क्षेत्र में सकारात्मक बदलाव के प्रयास करता।
   इन बिंदुओं को ध्यान में रखते हुए अध्यापक महोदय की सहायता से छात्र हल करें।

- **खेल आधारित (बुद्धि परीक्षण)**

1. चाँद
2. बन्दूक

7. बसंती हवा

उच्चारण आधारित

- **शुद्ध बोलो और लिखो–** मस्तमौला, उद्देश्य, झकोरा, लहलहाते, चमचमाती।

पाठ आधारित

- **मौखिक**

1. मस्तमौला हवा को कहा गया है।

2. बसन्ती हवा ने आम के पेड़ को झकोरा था।
3. दोपहर व्यतीत होने तक हवा गेहूँ की फसल के खेत में रही थी।
4. हवा द्वारा हिलाने पर भी अलसी पौधे की कलसी नहीं गिरी थी।
5. बसंती हवा को देखते ही अरहरी लजा गई थी।

- **लिखित**

1. बसंती हवा शहर, गाँव, बस्ती, नदी, रेत, निर्जन, हरे खेत, पोखर सब जगह जाती है।
2. महुआ के पेड़ पर चढ़कर बसंती हवा ने थपाथप मचाया।
3. पेड़ों से उतरने के बाद बसंती हवा गेहूँ के खेत में पहुँची।
4. बसंती हवा आम के पेड़ के कान में 'कू' करती है।
5. सम्पूर्ण सृष्टि बसंती हवा के साथ हँसने लगती है।

- **प्रत्यास्मरण**

संदर्भ एवं प्रसंग– केदारनाथ अग्रवाल द्वारा रचित 'बसंती हवा' एक आनंदमयी और कल्पनाशील कविता है, जिसमें हवा को एक निडर, मस्तमौला और स्वतंत्र मुसाफिर के रूप में चित्रित किया गया है। यह हवा बिना किसी फिक्र के, खेत-खलिहानों, नदियों और पेड़ों के बीच चंचलता से घूमती है और प्रकृति में नई ऊर्जा व खुशी लाती है।

व्याख्या– पथिक आ रहा था, उसे भी बंसती हवा ने धकेल दिया, इस सबको देखकर दिशाएँ हँसने लगीं। हरे-भरे खेत भी लहलहाते हुए हँसने लगे, चमचमाती धूप भी बसंती हवा को देखकर हँसने लगी। बसंती हवा पथिक (राहगीर) को हिलाकर वह पूरी सृष्टि (पेड़, खेत, धूप) में हँसी और खुशी भर देती है।

संक्षेप में, यह कविता बसंत ऋतु के आगमन पर प्रकृति के रंगीन, जीवंत और स्वतंत्र रूप को दर्शाती है।

- **अपनी समझ से**

1. (ख) मस्तमौला
2. (घ) सभी से
3. (क) आम के
4. (ग) पथिक को
5. (क) जगत

- **सोच-समझकर**

1. ईश्वर द्वारा हवा (वायुमंडल) की रचना न होने पर पृथ्वी पर जीवन कतई संभव नहीं था, क्योंकि हवा ही जीवन का आधार है। इसके बिना श्वसन क्रिया ठप होने से मिनटों में जीवों की मृत्यु हो जाती, पौधे भोजन नहीं बना पाते और पृथ्वी बाह्य अंतरिक्ष के रेडिएशन से झुलस जाती। हवा साँस, सुरक्षा और ध्वनि के प्रसार के लिए अनिवार्य है।

   हवा में मौजूद ऑक्सीजन श्वसन के लिए अनिवार्य है, जिसके बिना मानव और जंतु जीवित नहीं रह सकते। पौधे हवा में उपस्थित कार्बन डाइऑक्साइड का उपयोग करके अपना भोजन बनाते हैं। हवा के बिना न पौधे रहेंगे, न भोजन।

   वायुमंडल की गैसें सूर्य से आने वाली पराबैंगनी किरणों से पृथ्वी की रक्षा करती हैं। हवा ध्वनि तरंगों को प्रवाहित करती है, जिससे हम सुन पाते हैं और यह पृथ्वी के तापमान को भी नियंत्रित रखती है।

   हवा के बिना पृथ्वी मंगल की तरह एक निर्जीव और बंजर ग्रह बन जाती।

2. यदि बसंती हवा पूरी दोपहरी एक ही पेड़ पर थपथप (हलचल) मचाती रहती, तो पेड़ की टहनियाँ और पत्ते बुरी तरह थककर चूर हो जाते। लगातार झकझोरने से फूल और कच्चे फल नीचे गिर सकते थे, जिससे पेड़ का सौंदर्य कम हो जाता और उसे काफी नुकसान पहुँचता।

   हवा के लगातार झटकों से पत्ते झड़ जाते और टहनियाँ टूट भी सकती थीं। पेड़ पर लगे फूल और छोटे फल हवा की मस्ती में नीचे गिर जाते, जिससे फल कम आते। पेड़ को आराम नहीं मिलता और वह पूरी तरह झुककर थक जाता।

   हालाँकि, बसंती हवा निडर और मस्तमौला है, वह किसी एक स्थान पर रुकती नहीं, बल्कि प्रकृति में नई ऊर्जा और मस्ती का संचार करती है।

- **भाव चर्चा**

1. **भाव –** हवा खुद को बावली इसलिए कहती है क्योंकि वह अपनी मर्जी की मालिक है और बिना किसी योजना के,

बस नटखटपन में इधर-उधर चलती रहती है। हवा बहुत खुशमिजाज है, उसे किसी भी बात की चिंता या फिक्र नहीं है, वह निडर होकर निर्बाध रूप से बहती है।

2. **भाव –** इसका भाव यह है कि बसंत ऋतु में चलने वाली यह हवा बहुत स्वतंत्र, निडर और मस्तमौला (बिना किसी फिक्र के) है, जो बिना किसी बंधन के अपनी मर्जी से जहाँ चाहे आती-जाती है और प्रकृति में उमंग भरती है। यह हवा प्रकृति में चंचलता और नई ऊर्जा लाती है, जो सब कुछ जीवंत कर देती है। यह एक विचित्र मुसाफिर है जो कहीं रुकती नहीं, बस चलती रहती है।
3. **भाव –** केदारनाथ अग्रवाल की कविता 'बसंती हवा' की इस पंक्ति का भाव यह है कि बसंती हवा गेहूँ के खेतों में पहुँचकर तेजी से बहने लगती है, जिससे फसल में लहरें उत्पन्न होती हैं। हवा अपनी मस्ती और उत्साह में लहरों का दृश्य बनाती है, जो बसंत ऋतु संदर्भ व व्याख्या की सुहावनी और जीवंत सुंदरता को दर्शाता है।

   जब हवा गेहूँ के खेत से गुजरती है, तो पौधे हिलते हैं, जो पानी की लहरों जैसा दृश्य पैदा करता है। 'खूब मारी' हवा की तेज गति और उसकी मस्ती को दर्शाता है।
4. **भाव –** 'इसी हार को पा हिलाई न सरसों' पंक्ति केदारनाथ अग्रवाल की कविता 'बसंती हवा' से ली गई है। इसका अर्थ है कि बसंती हवा जब अलसी के खेत से हार गई (उसकी तन्मयता भंग न कर सकी), तो उसने आगे सरसों के खेत में जाकर शरारत नहीं की और सरसों को नहीं हिलाया। यह हवा की मस्ती और चंचलता को दर्शाता है, जो सरसों को बिना छेड़े आगे बढ़ जाती है।

   यह पंक्ति हवा के निश्चिंत और लापरवाह स्वभाव को दर्शाती है, जो किसी एक जगह न रुककर आगे निकल जाती है।
5. **भाव –** बसंत ऋतु में चारों ओर फैली हुई रंग-बिरंगी प्रकृति (खेतों में सरसों, फूल) ऐसी लग रही है जैसे प्रकृति अपनी प्रसन्नता में खिलखिलाकर हँस रही हो। यह धूप चिलचिलाती नहीं, बल्कि कोमल और प्रिय (प्यारी) है, जो बसंत के सुहावनेपन को बढ़ाती है। यह पंक्ति बसंत ऋतु के उल्लास, मस्ती और जीवंतता का एक सजीव चित्रण है, जहाँ हवा, धूप और प्रकृति सब मिलकर एक अद्भुत दृश्य बनाते हैं।

   यह पंक्ति बसंत ऋतु के सुखद, सुंदर और आनंदमयी वातावरण के प्रति कवि के प्रेम को दर्शाती है।

● **रिक्त स्थान पूर्ति**

1. फिकर
2. बस्ती
3. उतरकर
4. सरसों
5. लहलहाते

● **पाठ से आगे (मन के विचार)**

1. यदि मुझे एक दिन के लिए हवा बना दिया जाए, तो मैं अपने अस्तित्व को केवल बहने तक सीमित न रखूँगा, बल्कि पथिकों के जीवन का साथी बनने का प्रयास करूँगा। जब कोई पथिक लंबी यात्रा से थककर पसीने से तर-बतर हो जाएगा, तब मैं मंद समीर बनकर उसके चेहरे को छुऊँगा और उसकी थकान को धीरे-धीरे दूर कर दूँगा। धूप की तपन से झुलसते उसके कदमों को शीतलता प्रदान करूँगा, ताकि उसे अपनी राह पर आगे बढ़ने की शक्ति मिल सके। मैं कभी तेज झोंकों में उसे असंतुलित नहीं करूँगा, बल्कि उसके कदमों के साथ तालमेल बैठाकर उसे सहारा दूँगा।

   यदि कोई पथिक अकेला और उदास मन से यात्रा कर रहा होगा, तो मैं उसके आस-पास कोमल स्पर्श बनकर बहूँगा और उसे एहसास दिलाऊँगा कि वह अकेला नहीं है। पेड़ों की पत्तियों को हिलाकर मधुर सरसराहट उत्पन्न करूँगा। जिससे उसके मन में सुकून और प्रसन्नता का संचार हो। खेतों के रास्ते से गुजरते हुए मैं फसलों की सुगंध अपने साथ लेकर चलूँगा, ताकि पथिक के मन में मिट्टी की सौंधी महक से अपनापन जागे। पहाड़ी मार्गों पर चढ़ते समय मैं उसके चेहरे को ठंडक देकर उसकी थकावट कम करूँगा और रेगिस्तान की गरमी में उसे राहत पहुँचाने का हरसंभव प्रयास करूँगा।

   यदि कहीं वातावरण दूषित होगा, तो मैं उसे शुद्ध करने का प्रयास करूँगा, ताकि पथिक

स्वच्छ वायु में साँस ले सके। मैं फूलों की खुशबू, नदियों की नमी और हरियाली की ताजगी अपने साथ लेकर चलूँगा, जिससे पथिक के मन में नई ऊर्जा और आशा का संचार हो।

इस प्रकार, यदि मैं एक दिन के लिए हवा बनूँ, तो मेरा व्यवहार करुणा, समानता और सेवा-भाव से परिपूर्ण होगा। मैं पथिकों की राह को आसान बनाने, उनकी थकान मिटाने और उनके मन में उत्साह भरने का कार्य करूँगा। मेरा उद्देश्य केवल बहना नहीं, बल्कि मानव जीवन में आनंद, शांति और सहयोग का संदेश फैलाना होगा।

2. केदारनाथ अग्रवाल की कविता में बसंती हवा अत्यंत चंचल, निडर और स्वच्छंद है, जो महुआ, आम और अलसी के बाद जब अरहर के खेत में पहुँचती है, तो उसके अल्हड़पन और जोश को देखकर अरहर का पौधा लजा गया होगा। हवा की कोमलता और मस्ती ने उसे न केवल झुकाया, बल्कि अपनी निडरता से शर्माने पर मजबूर कर दिया, यह प्रकृति के सौंदर्य का एक संवाद है।

● **भाषा आधारित**

1. अनोखा — अध्यक्ष
   महोदया — भक्त
   चूहा — ज्ञानवान
   कवयित्री — साँपिन

2. हिमालय
   शुभारम्भ
   भानूदय
   महेश्वर
   देवर्षि

● **कल्पना आधारित**

1. यदि प्रकृति ने अपना कार्य करना बंद कर दिया, तो पृथ्वी पर जीवन का अस्तित्व तुरंत समाप्त हो जाएगा। हवा, पानी, मिट्टी और प्रकाश का चक्र रुकने से अकाल, रेगिस्तान और जहरीला वातावरण बन जाएगा, जिससे मनुष्य और जीव-जंतुओं के लिए साँस लेना असंभव हो जाएगा।
2. पेड़-पौधों के बिना जीवन की कल्पना एक भयावह बंजर रेगिस्तान जैसी है। ऑक्सीजन की कमी से साँस लेना दूभर हो जाएगा और भोजन (फल, सब्जी, अनाज) के अभाव में अकाल पड़ जाएगा। धरती का तापमान इतना बढ़ जाएगा कि जीवन असंभव हो जाएगा, पर्यावरण पूरी तरह प्रदूषित हो जाएगा और पारिस्थितिक संतुलन टूटने से सब कुछ समाप्त हो जाएगा।

● **खेल आधारित**

पेड़-पौधों के नाम छाँटना –

1. शीशम 2. मदार
3. खैर 4. बम्बू
5. बबूल 6. महुआ
7. नीम 8. आम
9. महोगनी 10. बरगद
11. बेल

8. नंगे पैर

उच्चारण आधारित

● **शुद्ध लिखो और बोलो–**

कार्यक्रम, कष्टपूर्वक, निश्चय, त्योहार, उत्साह, कठिनाई

पाठ आधारित

● **मौखिक**

1. बेबी दोपहर के समय पलंग पर बैठकर खिड़की से बाहर झाँक रही थी।
2. कुर्सी पर बैठकर बेबी ने अपनी माँ से कहा कि माँ! आज नया पोस्टमैन आया था।
3. तीसरे दिन बेबी ने पोस्टमैन से कहा कि "क्या तुम नये पोस्टमैन हो?"
4. पोस्टमैन के नंगे पैर देखकर बेबी ने निश्चय किया कि वह उस गरीब पोस्टमैन को नंगे पैर नहीं रहने देगी।
5. बेबी त्योहार का उपहार माँगने के लिए पोस्टमैन से कहती है।

● **लिखित**

1. बेबी ने जब डाक लेने हेतु हाथ बढ़ाया तो उसे याद आया कि आज वह दाढ़ी वाला

पोस्टमैन नहीं था, बल्कि बच्चों जैसे कोमल चेहरे वाला कोई नया पोस्टमैन था।

2. कोमल और दबी हुई आवाज में पोस्टमैन ने बेबी से कहा, "लगने दो बहिन! पोस्टमैन का काम जिस-तिस की डाक को जिस-तिस के हाथ में सौंपने का है, अहाते में फेंककर चले जाने का नहीं।"
3. पोस्टमैन को नंगे पैर देखकर बेबी सोचने लगी कि पोस्टमैन ने अपने पैरों में कुछ पहना क्यों नहीं था? शायद उसके जूते फट गये होंगे, वे सही करने हेतु मोची को दिए होंगे।
4. धूप से उसका चेहरा लाल हो जाता और उसकी कमीज पसीने के कारण पीठ से चिपकी रहती।
5. वह मन ही मन सोचने लगा– इस बच्ची ने मेरे नंगे पैरों को जूते दे दिए किंतु उसके पास तो पैर ही नहीं हैं वो मैं उसे कैसे दे पाऊँगा?

● **प्रत्यास्मरण**

1. बेबी ने मुस्कराते हुए डाकिया को जूतों का बंडल सौंपा।
2. पोस्टमैन ने पोस्ट ऑफिस पहुँचकर अपने साहब से कहा, "साहब मेरी लाइन बदल दीजिए, सिटी में कहीं भी बदली कर दीजिए।"
3. बेबी के उपहार को पाकर डाकिया की आँखें भर आईं क्योंकि एक विकलांग बच्ची ने नंगे पैरों को जूते दे दिए।
4. पोस्टमैन भट्ट के पास जाकर बोला, "साहब मेरी लाइन बदल दीजिए, सिटी में कहीं भी बदली कर दीजिए।"

● **अपनी समझ से**

1. (ग) पलंग पर
2. (ख) साढ़े बारह बजे
3. (ख) प्रसन्नता
4. (ख) कोलतार की सड़कें
5. (ग) हरीबा

● **सोच-समझकर**

1. बेबी के स्थान पर मैं पोस्टमैन को नंगे पैर देखता तो वही करता जो बेबी ने किया। अपने माता-पिता से पोस्टमैन के प्रति अपने विचार रखता और मानवीय संवेदनाओं से अवगत कराता। अपने माता-पिता से कह कर उसके लिए एक जोड़ी बाजार से जूते मँगवाता और उसे पोस्टमैन को देता, जिससे मुझे भी खुशी मिलती और पोस्टमैन भी खुश होता।
2. पोस्टमैन (डाकिया) का जीवन अत्यधिक जिम्मेदारी वाला होता है क्योंकि वे व्यक्तिगत पत्रों, महत्त्वपूर्ण दस्तावेजों, मनीऑर्डर (पैसों) और पार्सल को हर मौसम में सही पते पर समय से पहुँचाते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में, वे बैंकिंग सेवाओं, आधार कार्ड और पेंशन जैसे कार्यों के जरिए लोगों को सरकार से जोड़ते हैं, जिससे उनकी भूमिका बहुत भरोसेमंद हो जाती है।

   एक पोस्टमैन समयबद्धता, ईमानदारी और कड़ी मेहनत के साथ लोगों के बीच भरोसे का पुल बनाता है, जो उनके कार्य को अत्यधिक जिम्मेदारी पूर्ण बनाता है।

● **पंक्तियों पर चर्चा**

1. "शौक से कोई नंगे पैर घूमेगा बेटी?" पंक्ति का भावार्थ यह है कि गरीबी, मजबूरी या अभाव के कारण व्यक्ति को कष्ट सहना पड़ता है, न खुशी से। यह एक भावात्मक अभिव्यक्ति है जो दर्शाती है कि सुख-सुविधाओं के अभाव में, जैसे कि नंगे पैर चलना, किसी की इच्छा नहीं बल्कि मजबूरी होती है। यह सामाजिक और आर्थिक असमानता के प्रति दर्दनाक विवशता है।

   यह पाठ के आधार पर, गरीबी और अभाव के जीवन को उजागर करती है जहाँ बुनियादी जरूरतें भी पूरी नहीं होतीं। यह पंक्ति अत्यधिक अभावपूर्ण जीवन की विवशता को एक भावनात्मक सवाल के रूप में प्रस्तुत करती है।
2. "माप लेकर वह धीरे-धीरे कमरे में वापस आ गई।" पंक्ति का भावार्थ यह है कि मुख्य पात्र बेबी अपनी विकलांगता के बावजूद अपनी जिम्मेदारी के प्रति सतर्क थी। 'धीरे-धीरे वापस आना' उसके संकोच, हताशा और जीवन के प्रति उसकी नीरसता को दर्शाता है। कहानी की पात्र का जीवन

अत्यन्त सादा और संघर्षपूर्ण है, जो उसके हर छोटे काम में झलकता है।

3. "आपने त्योहार का उपहार नहीं माँगा?" बेबी ने डाकिया से इसलिए कहा कि– ज्यादातर सरकारी कर्मचारी तीज-त्योहार पर उपहार माँगते हैं। बेबी की इच्छा थी कि डाकिया के उपहार माँगने पर वह डाकिया को जूता उपहारस्वरूप देकर उसकी मदद कर सके।

4. "साहब मेरी लाइन बदल दीजिए, सिटी में कहीं भी बदली कर दीजिए।" पंक्ति का भावार्थ है कि गरीब और अभावग्रस्त लाचारी में अपनी खुद्दारी और गरिमा नहीं खोता। बेबी द्वारा जूते उपहारस्वरूप देकर डाकिये के मन में शर्मिंदगी के कारण उसने ऐसा कहा। यह पंक्ति कहानी में नंगे पैर दौड़ने वाले पात्र की विवशता और मानवीय गरिमा को पुनः प्राप्त करने के संघर्ष को उजागर करती है।

- **रिक्त स्थान पूर्ति**

1. गीत-माला
2. पोस्टमैन
3. भगवान
4. नंगे पैर
5. सकपका कर।

- **पाठ से आगे (मन के विचार)**

1. यदि मुझे एक डाकिया का कार्य सौंपा जाये, तो मैं अपनी जिम्मेदारी का निर्वहन पूरी निष्ठा, ईमानदारी और समयबद्धता के साथ करूँगा/करूँगी। मैं अपनी वर्दी और झोले का सम्मान करते हुए, गर्मी-बरसात की परवाह किये बिना लोगों की चिट्ठियाँ, मनीऑर्डर और पार्सल समय पर उन तक पहुँचाऊँगा/पहुँचाऊँगी। मेरा उद्देश्य केवल डाक पहुँचाना नहीं, बल्कि लोगों के चेहरों पर मुस्कान लाना और उनके विश्वास को बनाए रखना होगा।

   एक डाकिया के रूप में, मैं समाज में रिश्तों की डोर को जोड़ने का कार्य करूँगा/करूँगी और अपनी वर्दी के गौरव को बनाए रखूँगा/रखूँगी।

2. विकलांग या दिव्यांग व्यक्तियों को शारीरिक, सामाजिक, आर्थिक और मनोवैज्ञानिक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। मुख्य कठिनाइयों में दुर्गम बुनियादी ढाँचा (रैंप, लिफ्ट की कमी), रूढ़िवादी सामाजिक दृष्टिकोण, शिक्षा और रोजगार के सीमित अवसर, परिवहन की बाधाएँ और पर्याप्त चिकित्सा सेवाओं का अभाव शामिल है, जो उनके स्वतंत्र जीवन और समावेशन को प्रभावित करते हैं।

- **भाषा आधारित**

1. शब्दों का वाक्यों में प्रयोग –

मौन – कक्षा में अध्यापक के आते ही छात्र **मौन** हो गये।

जुबान – राम ने मुझे सहायता की **जुबान** दी है।

उत्साह – बच्चों ने बड़े **उत्साह** से दीपावली का त्योहार मनाया।

त्योहार – **त्योहार** हमारे जीवन में खुशी और उत्साह लाते हैं।

संसार – हमें अपने अंदर के **संसार** (मन) को शांत रखना चाहिए।

2. विलोम शब्द

धूप – छाया/छाँव
माँ – पिता/बाप
बाहर – भीतर
परिचित – अपरिचित
मौन – वाचाल
पीछे – आगे।

- **कल्पना आधारित**

1. एक जगह बैठने से रीढ़ की हड्डी के निचले हिस्से पर दबाव पड़ता है। कूल्हे की गतिशीलता बनाए रखने के लिए बीच-बीच में उठकर टहलना जरूरी है। सोफे या डेस्क पर लंबे समय तक बैठे रहने से मांसपेशियाँ सख्त हो जाती हैं और रीढ़ की हड्डी के स्नायुबंधन अपनी जगह से हट सकते हैं या जाम हो सकते हैं।

   दिनभर एक ही जगह बैठे रहने से कई तरह की स्वास्थ्य समस्याओं का खतरा बढ़ जाता है। गतिहीन जीवनशैली से कुछ खास तरह के कैंसर, जैसे कि कोलोन कैंसर,

एंडोमेट्रियल कैंसर और फेफड़ों के कैंसर का खतरा बढ़ जाता है। बैठने से रक्तचाप बढ़ता है और चयापचय धीमा हो जाता है।

2. मोबाइल और इंटरनेट के दौर में डाक विभाग का महत्त्व कम हुआ है, लेकिन पहले डाकिये की पत्र लाने की खुशी अनमोल थी। वह खुशी बेसब्री से इंतजार, अपनों के हाथों की लिखावट को छूने, कागज की महक और पत्रों को सहेजकर रखने जैसी भावनाओं से भरी होती थी, जो आज के डिजिटल संदेशों में दुर्लभ है।

- **खेल आधारित (बुद्धि परीक्षण)**

(क) महात्मा गाँधी

(ख) वल्लभभाई पटेल

9. प्रकृति की गोद : कश्मीर

उच्चारण आधारित

- **शुद्ध लिखो और बोलो–**

आलीशान, अजनबियों, बारूद, हौसला, कश्मीर, चश्मेशाही।

पाठ आधारित

- **मौखिक**

1. लेखक ने कश्मीर की यात्रा का कार्यक्रम दिल्ली से बनाया था।
2. जम्मू मंदिरों के लिए प्रसिद्ध है।
3. वैष्णो देवी का मंदिर जम्मू में बना हुआ है।
4. चार चिनार चार बड़े-बड़े चिनार के पेड़ों वाला एक छोटा सा टापू है, जो आसपास डल झील के पानी से घिरा हुआ है।
5. चश्मेशाही यानी बादशाही सोता का पानी दवा का काम करता है।

- **लिखित**

1. लेखक के कुछ साथी वैष्णो देवी इसलिए नहीं जाना चाहते थे क्योंकि सीढ़ियाँ ज्यादा चढ़नी पड़तीं।
2. 'बस को भी चक्कर आने लगे' लेखक ने ऐसा इसलिए कहा कि रास्ता इतना टेढ़ा-मेढ़ा कि मोड़ों की गिनती करना मुश्किल हो गया।
3. पहलगाँव के विषय में लेखक ने बताया कि लिद्दर नदी के किनारे पहलगाँव बसा है। वहाँ पहुँचने पर लगा कि हम स्वर्ग में आ गए। लिद्दर की खूबसूरती ऐसी लगी जैसी स्वर्ग की नदियों की होती होगी।
4. शेषनाग झील से आगे अमरनाथ गुफा है, जहाँ रक्षाबंधन को लोग बाबा अमरनाथ के दर्शन करने के लिए देश-विदेश से आते हैं। ये बाबा अमरनाथ बर्फ के बने हुए हैं, जो चाँद के घटने-बढ़ने के अनुसार ही घटते-बढ़ते रहते हैं।
5. गुलमर्ग के विषय में लेखक ने बताया कि गुलमर्ग साढ़े छब्बीस सौ मीटर ऊँचा एक खूबसूरत चारागाह है, जहाँ हर मौसम में मोटर से पहुँचा जा सकता है। गोल्फ लिंक और बर्फ पर स्कीइंग के लिए यह बहुत मशहूर है। स्कीइंग के लिए तो भयंकर सर्दी के दिनों में जाना होता है।

- **प्रत्यास्मरण**

1. हिमालय की इस खूबसूरत वादी को और नजदीक से देखने के लिए दुबारा आने का इरादा करके हम लोग अपने घरों की ओर लौट पड़े।
2. कश्मीर में सेब के बाग, बादाम की बाड़ियाँ, केसर के खेत बहुतायत में हैं।
3. लेखक ने कश्मीर को स्वर्ग की उपमा दी है।
4. 'अगर कश्मीर नहीं देखा तो हिंदुस्तान में कुछ नहीं देखा' लेखक ने इसलिए कहा है कि बर्फ की चादरें ताने हिमालय के विशाल पर्वतखंड और झीलों के आईनों में मुँह झाँकती चोटियाँ, चश्मे, झरने और सबसे बढ़कर कश्मीर के भोले-भाले मेहमाननवाज लोगों के व्यवहार से कहा।

- **अपनी समझ से**

1. (ख) कश्मीर
2. (ग) सोने से
3. (क) जहाँगीर ने
4. (घ) ये सभी
5. (क) नीला

- **सोच-समझकर**

1. यदि लेखक हठपूर्वक अपने साथियों के साथ वैष्णो देवी के दर्शन करता, तो वे कटरा से

लगभग 24 किलोमीटर की खड़ी और थका देने वाली चढ़ाई पैदल, घोड़े, खच्चर या पालकी के सहारे पूरी करते। वे भीड़-भाड़ के जयकारे लगाते हुए, बाणगंगा, अर्धकुँवारी और साँझीछत जैसे स्थानों से होकर, अंत में प्राकृतिक गुफा या आधुनिक मार्ग से माँ वैष्णो देवी के भवन पहुँचकर दर्शन करते।

वे चढ़ाई की थकान के बावजूद हठ के कारण पैदल चलने का कष्ट उठाते या शारीरिक अक्षमता होने पर घोड़े, पालकी किराए पर लेकर यात्रा पूरी करते। इस हठपूर्वक यात्रा में उन्हें शारीरिक कष्ट के साथ-साथ भीड़ का सामना करना पड़ता, लेकिन दर्शन के बाद उन्हें आत्मिक संतोष और उपलब्धि की गहरी अनुभूति होती।

यह यात्रा उनके लिए एक चुनौतीपूर्ण लेकिन यादगार साहसिक अनुभव बन जाती, जो उनके दृढ़ निश्चय को दर्शाती।

2. बाबा अमरनाथ (बाबा बर्फानी) का आकार चन्द्रमा की कलाओं के अनुसार घटने-बढ़ने का मुख्य कारण प्राकृतिक और वैज्ञानिक है। गुफा की छत से पानी की बूँदें लगातार टपकती हैं। जो अत्यधिक ठंड में जमकर शिवलिंग बनाती हैं। पूर्णिमा के समय, चाँद की रोशनी और बढ़ते तामपान के साथ-साथ, पानी के जमाव से शिवलिंग पूर्ण आकार ले लेता है, जबकि अमावस्या तक यह धीरे-धीरे पिघलकर छोटा हो जाता है।

माना जाता है कि भगवान शिव ने इसी गुफा में माता पार्वती को अमर कथा सुनाई थी। वैज्ञानिक तौर पर, इसे वहाँ के तापमान में आने वाले बदलाव और टपकने वाले पानी की मात्रा (जो मौसम से प्रभावित होती है) के अनुसार समझा जा सकता है।

● **पंक्तियों पर चर्चा**

1. "पता कैसे चले कि स्वर्ग कैसा है? अगर कहीं हो स्वर्ग, तो वह यहीं है, वह यहीं है, वह यहीं है ...." यह प्रसिद्ध पंक्ति धरती के अद्भुत सौंदर्य, विशेषकर कश्मीर की वादियों की सुंदरता के लिए कही जाती हैं। यह भावार्थ है कि जब मनुष्य को कहीं अत्यधिक सुख, शांति और प्राकृतिक सुंदरता (बर्फ से ढकी चोटियाँ, हरी-भरी घाटियाँ, डल झील) एक साथ मिल जाए, तो वही स्वर्ग है।

   प्रकृति की गोद में बसने वाली इन वादियों में न केवल आँखों को सुंदरता मिलती है, बल्कि आत्मा को भी शांति मिलती है, जो स्वर्ग की कल्पना को साकार करती है। मुगल बादशाह जहाँगीर ने भी कश्मीर की सुंदरता को देखकर कहा था– "गर फिरदौस बर रु-ए-जमीं अस्त, हमीं अस्तो, हमीं अस्तो, हमीं अस्त" (अगर धरती पर कहीं स्वर्ग है, तो वह यहीं है)।

   संक्षेप में, यह पंक्ति उस परम सौंदर्य का प्रतीक है जो कश्मीर के रूप में धरती पर मौजूद है।

2. "राम-राम करते रामबन आ गया।" कन्हैया लाल नंदन द्वारा लिखे यात्रा वृत्तांत से पता चलता है कि हिमालय की ऊँची-ऊँची सड़कों से यात्रा करते-करते परेशान हो गये। बर्फीले पहाड़ों के बीच बस इतनी गहराई में उतरने लगी, फिर चढ़ने लगी, फिर उतरने लगी। चारों तरफ हरियाली और बर्फ से ढकी चोटियों को देखकर उत्साहित और खुश थे लेकिन सभी थक गए और राम-राम करते रामबन पहुँचे।

3. "उस सुरंग के पार करते ही स्वर्ग के दर्शन होने लगे।" का भावार्थ है कि किसी कठिन, अंधकारमय या चुनौतीपूर्ण परिस्थिति (सुरंग) को पार करने के बाद जीवन में अचानक अत्यधिक सुखद, शांत और अलौकिक सौंदर्य (स्वर्ग) का अनुभव होना। यह पंक्ति एक नाटकीय बदलाव, संघर्ष के बाद मिलने वाली असीम शांति और प्रकृति के अद्भुत दृश्य को दर्शाती है। यह एक ऐसा अनुभव है जो यात्रा की सारी थकान मिटाकर एक आध्यात्मिक या अद्भुत रोमांच से भर देता है।

4. "मैंने इतनी खूबसूरत नदी अपनी याद में कभी नहीं देखी थी।" इसका भावार्थ यह है कि लेखक ने अपने जीवन में पहली बार इतना अद्भुत और अलौकिक सौंदर्य देखा। यहाँ नदी का पहाड़ी अल्हड़पन, दूधिया सफेद बहाव, साँप की तरह बलखाती चाल और उसकी गर्जना मंत्रमुग्ध कर देती है।

बर्फीले पहाड़ों से निकलती नदी का पानी सफेद झाग के साथ बेहद तेजी से नीचे गिरता है। नदी का शोर (गर्जना) इतना तीव्र लगता है कि यदि वह न हो, तो पहलगाम का पूरा वातावरण सूना हो जाएगा। यह पंक्ति उस प्राकृतिक सौंदर्य को दर्शाती है जो मनुष्य को प्रकृति के करीब ले जाता है और उसे जीवन की सारी चिंताएँ भुला देता है।

5. "अगर कश्मीर नहीं देखा, तो हिंदुस्तान में कुछ नहीं देखा।" पंक्ति कश्मीर की अकल्पनीय प्राकृतिक सुंदरता को रेखांकित करती है, जो भारत के ताज के रूप में बर्फ से ढकी घाटियों, डल झील और हरी-भरी वादियों के माध्यम से धरती पर स्वर्ग का एहसास कराती है।

   यह कथन कश्मीर की बेमिसाल सुंदरता (बर्फीले पहाड़, डल झील, बगीचे) को दर्शाता है, जिसे वास्तव में पृथ्वी का स्वर्ग माना जाता है। यात्रा के दौरान, सैलानी न केवल प्राकृतिक सुंदरता का आनन्द लेते हैं, बल्कि यहाँ की समृद्ध संस्कृति, इतिहास और विशिष्ट भौगोलिक स्थिति का भी अनुभव करते हैं। यह कथन यह भी बताता है कि कश्मीर के बिना भारत का प्राकृतिक दृश्य अपूर्ण है, इसलिए कश्मीर की रक्षा और उसका दौरा करना अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। यह एक ऐसा अनुभव है जो इंसान को कुदरत के सबसे करीब ले जाता है।

- **रिक्त स्थान पूर्ति**

1. मंदिर
2. पहाड़ों का
3. सुरंग
4. श्रीनगर
5. श्रीनगर में

- **पाठ से आगे (मन के विचार)**

1. यदि लेखक के साथ भारी शरीर वाले मित्र न होते, तो वे संभवत: अपनी गति से जम्मू से अधिक दुर्गम, पहाड़ी और सांस्कृतिक स्थानों का भ्रमण करते। वे वैष्णोदेवी की चढ़ाई, बाहुफोर्ट, अमर महल पैलेस, मांडा चिड़ियाघर, रघुनाथ मंदिर और शहर के तंग बाजारों की सैर बिना किसी बाधा के कर पाते।

   वे बाहुफोर्ट, अमर महल पैलेस और मांडा चिड़ियाघर जैसे स्थानों पर इत्मीनान से घूम सकते थे, जहाँ सीढ़ियाँ चढ़नी पड़ती हैं। वे जम्मू के पारंपरिक डोगरी भोजन का आनंद लेने के लिए हर गली-मोहल्ले के छोटे भोजनालयों का भ्रमण कर सकते थे।

2. यदि जम्मू कश्मीर का तापमान 40-50 डिग्री सेल्सियस तक पहुँचता है, तो वहाँ का प्राकृतिक सौंदर्य पूरी तरह से बदल जाएगा। ग्लेशियर तेजी से पिघलकर बाढ़ ला सकते हैं, हरियाली सूखकर भूरी हो जाएगी और 'धरती का स्वर्ग' एक झुलसे हुए रेगिस्तानी इलाके में बदल सकता है।

- **भाषा आधारित**

1. (क) वे
   (ख) कौन
   (ग) अपना
   (घ) तुम्हारा
   (ङ) मैं
2. (क) कल
   (ख) जल्दी
   (ग) अचानक
   (घ) पैदल
   (ङ) प्रतिदिन

- **कल्पना आधारित**

1. बर्फीले इलाके में रहने वाले लोगों का जीवन बहुत ही दुर्लभ होता है। वह बहुत ही कठिन जीवन जीते हैं, क्योंकि उनके खाने से लेकर पीने के पानी तक के लिए बहुत दिक्कतों का सामना करना पड़ता है। उनकी दिनचर्या कुछ इस तरह होती है कि वह एक कमरे में ही सिमटकर रह जाते हैं, न वह बाहर आ सकते हैं न ही बाहर जा सकते हैं। इसका मुख्य कारण वहाँ पर पड़ने वाली बर्फ और सर्द मौसम जो बहुत ही मुश्किल होता है। इसलिए हमें उन लोगों की कदर करनी चाहिए जो बर्फीले इलाकों में रहते हैं। वह लोग बहुत ही सहनशील और मेहनती होते हैं।
2. कश्मीर में बर्फ से ढका हुआ दृश्य सपनों की पराकाष्ठा से कम नहीं लगता, जहाँ चारों ओर मखमली सफेद चादर बिछी होती है। गुलमर्ग और पहलगाम के देवदार के ऊँचे वृक्ष बर्फ से लदे नजर आते हैं और डल झील का पानी या तो जम जाता है या उसमें शांत बर्फबारी होती है। दूर-दूर तक फैली वादियों में मौन और शांति छा जाती है। चीड़ और देवदार के वृक्ष बर्फ का भार लिये हुए एकदम जादुई से लगते हैं।

   बसंत ऋतु में, जब बर्फ पिघलती है और बादाम के पेड़ खिलते हैं, तो नजारा और

भी अद्‌भुत हो जाता है। यह दृश्य शांत और बहुत ही मोहक होता है।

- **खेल आधारित (बुद्धि परीक्षण)**

  जम्मू-कश्मीर से संबंधित पर्यटन स्थल–

  1. पहलगाँव,
  2. पतनी टॉप,
  3. निशात बाग,
  4. गुलमर्ग,
  5. अनन्तनाग,
  6. चंदनबाड़ी,
  7. अमरनाथ।
  8. चार चिनार,
  9. शालीमार बाग,
  10. वनिहाल दर्रा,
  11. चश्मेशाही,
  12. शेषनाग,
  13. बेरी नाग

10. एलबम

उच्चारण आधारित

- **शुद्ध लिखो और बोलो–**

  बरछियाँ, प्रकाश, विज्ञापन, प्रतीक्षा, ब्राह्मण, भगवद्‌गीता

पाठ आधारित

- **मौखिक**

1. पंडित शादीराम दिल के बुरे न थे।
2. पंडित शादीराम को लाला सदानंद के पाँच रुपये चुकाने थे।
3. पत्रिकाएँ पंडित शादीराम के बड़े भाई मँगवाते थे।
4. पंडित शादीराम को चित्रों के विषय में यह आशा न थी कि कोयला की खान में हीरा मिल जाएगा।
5. पंडित शादीराम रोगी लाला सदानंद को भगवद्‌गीता सुना रहे थे।

- **लिखित**

1. पंडित शादीराम, लाला सदानंद के विषय में सोचा करते थे कि लाला कैसे भलेमानस हैं, जो अपनी रकम के बारे में मुझसे बात तक नहीं करते।
2. लाला सदानंद ने पंडित शादीराम के घर की अलमारी में अनेक बंगला, हिंदी और अंग्रेजी की मासिक पत्रिकाएँ देखीं।
3. सुंदर और रंगीन चित्रों को देखकर लाला सदानंद बोले, "ये चित्रकला के बढ़िया नमूने हैं। अगर किसी जरूरतमंद शौकीन को पसंद आ जाएँ, तो आप हजार-दो हजार रुपये बड़ी आसानी से कमा सकते हैं।
4. लाला सदानंद ने चित्रों को एलबम में लगवाकर, पता सहित विज्ञापन दे दिया।
5. पंडित शादीराम, लाला सदानंद को अन्त में, उन्हें पहले से भी अधिक सज्जन, अधिक उपकारी और ऊँचा समझने लगे थे।

- **प्रत्यास्मरण**

1. पंडित जी की नजर में लाला सदानंद सज्जन व्यक्ति थे।
2. पंडित जी से लाला सदानंद ने आशीर्वाद लिया।
3. पंडित जी को पहली बार कर्ज चुकाने की खुशी का अनुभव हुआ।
4. लाल सदानंद को पंडित जी ने आशीर्वाद दिया कि, "परमात्मा आपको चिरंजीवी रखे।"

- **अपनी समझ से**

1. (क) मोहर के
2. (ख) चार
3. (घ) ये सभी
4. (ग) 1000
5. (घ) भगवद्‌गीता

- **सोच-समझकर**

1. समाज में आज सच्चाई और ईमानदारी जीवित है, क्योंकि यह मानवीय संबंधों, विश्वास और नैतिक मूल्यों की आधारशिला है। यद्यपि भ्रष्टाचार की खबरें सामने आती हैं, लेकिन निस्वार्थ सेवा करने वाले आम लोग, ईमानदार सैनिक, कर्तव्यनिष्ठ शिक्षक और अपनी गलतियों को स्वीकार करने वाले नागरिक ही इस समाज को सही रास्ते पर थामे हुए हैं।

   सच्चाई कोई दुर्लभ वस्तु नहीं, बल्कि रोजमर्रा के छोटे-छोटे फैसलों (जैसे– रिश्वत न देना, सच बोलना) के रूप में हमारे बीच मौजूद है जो रिश्तों को मजबूत बनाता है।

2. लाला सदानंद एक अत्यन्त उदार, दयालु और परोपकारी व्यक्ति हैं, जो दूसरों के आत्म-सम्मान को ठेस पहुँचाए बिना गुप्त रूप से मदद करते हैं। उनके जैसे व्यक्तित्व का उदाहरण 'हार की जीत' कहानी के बाबा भारती हैं, जो डाकू खड्ग सिंह को भी अपनी नैतिकता से बदल देते हैं, वैसे ही जैसे सदानंद ने पंडित शादीराम की मदद की। ऐसा ही एक अन्य उदाहरण मुंशी प्रेमचंद की कहानी 'ईदगाह' में हामिद का बालपन के बावजूद समझदार और परोपकारी होना भी सदानंद की तरह दूसरों की भावनाओं को समझने का एक उदाहरण है। ये पात्र निःस्वार्थ भाव से दूसरों की मदद करने वाले सज्जन व्यक्ति हैं।

- **पंक्तियों पर चर्चा**

	किसने कहा	किससे कहा
1.	पंडित शादीराम ने	लाला सदानंद से
2.	लाला सदानंद ने	पंडित शादीराम से
3.	लाला सदानंद ने	पंडित शादीराम से
4.	लाला सदानंद ने	पंडित शादीराम से
5.	लाला सदानंद ने	पंडित शादीराम से

- **रिक्त स्थान पूर्ति**

1. विवशता
2. बच्चों
3. परमात्मा
4. बेसुध
5. होश

- **सही-गलत**

1. (✗), 2. (✓), 3. (✓), 4. (✓), 5. (✓)।

- **पाठ से आगे (मन के विचार)**

1. एलबम के अलावा स्मृतियों को सँजोने के लिए डिजिटल स्टोरेज (गूगल फोटोज, पेन ड्राइव), स्क्रैप बुक, डायरी लेखन, वीडियो लॉग बनाना, पुरानी वस्तुओं को सहेजकर रखना और यादों के बक्से जैसे रचनात्मक तरीके बेहतरीन विकल्प हैं। ये माध्यम यादों को जीवित रखते हैं।

   इन तरीकों से आप अपनी अनमोल यादों को हमेशा के लिए सुरक्षित रख सकते हैं।

2. रिश्ता और धन दोनों जीवन के लिए आवश्यक हैं, लेकिन मानवीय खुशी और भावनात्मक सुरक्षा के लिए रिश्ते अधिक महत्त्वपूर्ण माने जाते हैं। धन केवल भौतिक सुख और स्थिरता प्रदान करता है, जबकि रिश्ते कठिन समय में भावनात्मक सहारा, प्यार और मानसिक शांति देते हैं, जो धन से नहीं खरीदे जा सकते।

   धन साधन हो सकता है, लेकिन रिश्ते जीवन का उद्देश्य हैं। अत्यधिक धन होने पर भी अकेलेपन में खुशी नहीं मिल सकती, जबकि मजबूत रिश्तों के साथ कम धन में भी संतुष्ट रहा जा सकता है।

- **भाषा आधारित**

1. एकैक, तथैव, जलौध, महौषध
2. माता और पिता, पाप और पुण्य, दाल और रोटी, अन्न और जल, राम और लखन
3. स्वस्थ, दुखी, अप्रसन्न, बुरी, असफलता, बेचना

- **कल्पना आधारित**

1. यदि मेरे किसी सहपाठी को आर्थिक तंगी के कारण उच्च शिक्षा में कठिनाई आती है तो मैं नैतिक समर्थन देने के साथ-साथ छात्रवृत्ति खोजने, स्कूल/कॉलेज प्रशासन से बात करके फीस कम करने, पुराने नोट्स-किताबें साझा करने और छोटे-मोटे पार्ट-टाइम जॉब्स या क्राउडफंडिंग के माध्यम से धन जुटाने में उसकी मदद करूँगा।

   मेरा उद्देश्य यह सुनिश्चित करना होगा कि किसी भी प्रतिभाशाली छात्र की शिक्षा धन के अभाव में न रुके।

2. किसी आर्थिक मदद करने से पहले उसकी ईमानदारी, वास्तविक आवश्यकता, मेहनत करने की इच्छा और आत्मनिर्भर बनने का लक्ष्य देखना सबसे महत्त्वपूर्ण है। मदद ऐसी हो जो उन्हें सशक्त बनाए, न कि केवल निर्भर। सही व्यक्ति की पहचान के लिए उनकी साख और स्थिति की सच्चाई जाँचना आवश्यक है।

   मदद करने के तरीके– (i) सीधे नगद के बजाय फीस, इलाज का बिल या सीधे कच्चा माल (जैसे-सब्जी या सिलाई मशीन) प्रदान करें, ताकि पैसे का सदुपयोग हो। (ii) सम्मानजनक तरीका – मदद इस तरह करें कि उसे अपनी गरीबी पर शर्मिंदगी न महसूस हो, बल्कि उसे गरिमा महसूस हो।

- **खेल आधारित**

1. अध्यापक की सहायता से छात्र स्वयं करें।

(बुद्धि परीक्षण)

1. ओणम
2. भैया दूज
3. ईद
4. पोंगल
5. नवरात्र
6. दीपावली
7. होली
8. दशहरा
9. क्रिसमस
10. रक्षाबंधन

11. कोशिश करने वालों की हार नहीं होती

उच्चारण आधारित

- **शुद्ध बोलो और लिखो–**

कोशिश, विश्वास, डुबकियाँ, हैरानी, चुनौती, मैदान

पाठ आधारित

- **मौखिक**

1. लहरों से डरकर नौका पार नहीं हो सकती।
2. मन का विश्वास रगों में साहस भरता है।
3. गिरकर चढ़ना विश्वास रखने वालों को नहीं अखरता है।
4. गहरे पानी में सहजता से मोती प्राप्त नहीं होता है।
5. चुनौती असफलता को कहा गया है।

- **लिखित**

1. कोशिश करने वालों की हार नहीं होती।
2. डुबकियाँ गोताखोर सिंधु (समुद्र) में लगाता है।
3. आखिर विश्वास रखने वाले की मेहनत बेकार नहीं होती है।
4. नींद-चैन को सफल न होने तक त्यागने के लिए कहा गया है।
5. संघर्ष का मैदान छोड़कर न भागने के लिए कहा गया है।

- **प्रत्यास्मरण**

संदर्भ एवं प्रसंग– यह पंक्तियाँ सोहनलाल द्विवेदी की कविता 'कोशिश करने वालों की हार नहीं होती' से ली गई हैं, जिसमें उन्होंने लोगों को असफलता से निराश न होने और लगातार संघर्ष करने की प्रेरणा दी है।

व्याख्या– द्विवेदी जी ने कहा है कि असफलता को हार मानकर निराश होने के बजाय, इसे एक चुनौती के रूप में स्वीकार करें। यह आपको अपनी कमियों को खोजने और सुधारने का मौका देती है। विश्लेषण करें कि किस गलती या कमी के कारण असफलता मिली और उस कमी को सुधारकर पुनः प्रयास करें। जब तक अंतिम लक्ष्य (सफलता) प्राप्त न हो जाए, तब तक आराम न करें। सफलता के लिए कड़ी मेहनत और समर्पण अनिवार्य है। कठिनाइयों से डरकर या हार मानकर अपने कर्मक्षेत्र (मैदान) को न छोड़ें, बल्कि उसका डटकर सामना करें। बिना कुछ किए, बिना मेहनत किए कोई सफल नहीं होता। जो व्यक्ति निरंतर प्रयास और कोशिश करता है, अंततः सफलता उसे ही मिलती है।

- **अपनी समझ से**

1. (ख) कोशिश करने वालों की
2. (क) साहस
3. (ग) गोताखोर
4. (क) दोगुना
5. (ग) जय-जयकार

- **सोच-समझकर**

1. परिश्रमशील व्यक्ति मेहनत और लगन से भाग्य का निर्माता स्वयं बनकर कठिन से कठिन लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है। वह न केवल आत्मनिर्भर और आत्मविश्वासी बनता है, बल्कि अपनी मेहनत से सफलता, सुख-समृद्धि और समाज में सम्मानजनक स्थान हासिल करता है। ऐसा व्यक्ति असंभव को भी संभव बना सकता है और दूसरों के लिए प्रेरणा बनता है।
2. कार्य में सफलता न मिलने पर हताश होने के बजाय, आपको अपनी रणनीति का पुनर्मूल्यांकन करना चाहिए। मुख्य रूप से अपने लक्ष्य की स्पष्टतः जाँच करें, कार्य योजना में सुधार करें, लगातार मेहनत जारी रखें और धैर्य न खोएँ। अपनी असफलताओं से सीखें और अपनी कार्यक्षमता बढ़ाने के लिए सकारात्मक मानसिकता बनाए रखें।

- **भाव चर्चा**

1. **भाव–** पंक्ति में यह बताया गया है कि प्रयास करने वालों की कभी हार नहीं होती और मन का विश्वास व्यक्ति को साहस देता है। असफलता के कारणों और गोताखोरों के कार्य को समझना भी महत्त्वपूर्ण है।
2. यह पंक्ति 'कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती' कविता (सोहनलाल द्विवेदी) से है। इसका भाव है कि निरंतर प्रयास करने वालों को बार-बार असफलता (चढ़कर गिरना) और फिर प्रयास करना (गिरकर चढ़ना) कष्ट या निराशा नहीं देता है, बल्कि उनका आत्मविश्वास बढ़ाता है, क्योंकि उन्हें विश्वास होता है कि मेहनत अंतत: सफलता लायेगी।
3. "मिलते नहीं सहज ही मोती गहरे पानी में।" पंक्ति का भाव यह है कि जीवन में बहुमूल्य सफलताएँ या उपलब्धियाँ (मोती) बिना कठिन संघर्ष या मेहनत के आसानी (सहज) से प्राप्त नहीं होतीं। जिस प्रकार कीमती मोती पाने के लिए गोताखोर को समुद्र की गहराई में जाना पड़ता है, वैसे ही सफलता के लिए संघर्ष रूपी 'गहरे पानी' में मेहनत करनी पड़ती है।

   इस पंक्ति में कहा गया है कि उत्तम फल या सफलता पाने के लिए गहराई में उतरना, यानी कड़ी मेहनत करना अनिवार्य है। यह जीवन की चुनौतियों से न डरने और निडर होकर लक्ष्यों का पीछा करने के लिए प्रेरित करती है, ठीक वैसे ही जैसे एक गोताखोर मोती पाने के लिए समुद्र की गहराई से नहीं डरता।
4. "मुट्ठी उसकी हर बार खाली नहीं होती।" यह पंक्ति गोताखोरों (मेहनतकशों) के लिए कही गई है। इस पंक्ति में कवि ने कहा है कि समुद्र में मोती खोजना आसान नहीं है। परंतु एक गोताखोर में अदम्य साहस और उत्साह भरा होता है। वह बार-बार डुबकियाँ लगाता है और उसे कई बार खाली हाथ आना पड़ता है लेकिन वह अपना आत्मविश्वास नहीं खोता।

   कवि आगे कहता है कि डुबकियाँ (प्रयास) लगाते-लगाते अंतत: मोती (सफलता) मिल ही जाता है। इसलिए हमें अपना उत्साह, विश्वास और हिम्मत नहीं हारनी चाहिए।
5. "संघर्ष का मैदान छोड़ मत भागो तुम।" पंक्ति का भाव यह है कि जीवन में आने वाली कठिनाइयों, असफलताओं और चुनौतियों से डरकर या हार मानकर हमें अपने लक्ष्य के मार्ग से पीछे नहीं हटना चाहिए। कवि सोहनलाल द्विवेदी जी के अनुसार, जीवन एक संघर्ष है और मेहनत से जी चुराकर भागने के बजाय साहसपूर्वक उनका सामना करना ही सही दृष्टिकोण है। यह पंक्ति मनुष्य को साहस, धैर्य और विपरीत परिस्थितियों में भी डटे रहने की प्रेरणा देती है। मुसीबतों से डरकर कार्यस्थल या जीवन के संघर्षों (मैदान) को छोड़कर भागना कायरता है। जब तक अंतिम सफलता न मिल जाए, तब तक मेहनत करना नहीं छोड़ना चाहिए।

- **रिक्त स्थान पूर्ति**

1. चींटी जब
2. आखिर उसकी
3. दुगना उत्साह
4. एक चुनौती
5. ही जय-जयकार

- **पाठ से आगे**

1. कक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करने के लिए नियमित अध्ययन, सक्रिय कक्षा भागीदारी, समय प्रबंधन, स्मार्ट अध्ययन तकनीकों (जैसे– नोट्स बनाना और रिवीजन) का संयोजन आवश्यक है। आगे बैठकर ध्यान केंद्रित करने, शिक्षकों से मार्गदर्शन लेने और अवधारणाओं को रटने के बजाय समझने पर ध्यान केंद्रित करने से सफलता निश्चित की जा सकती है।
2. मेहनत का फल सदैव सुख और संतोष देने वाला होता है क्योंकि यह आत्म-विश्वास बढ़ाता है, योग्यता विकसित करता है और सफलता की ठोस नींव रखता है। यह न केवल भौतिक फल (पैसा, पद) देता है, बल्कि मेहनत से अर्जित सफलता अनमोल और स्थायी होती है, जो लंबे समय तक खुशी प्रदान करती है।

- **भाषा आधारित**

1. **भाववाचक संज्ञा बनाइए–** चढ़ाई, सफलता, कला, हारना, मानवता, पशुता।

2. **प्रत्यय लगाकर नया शब्द –** असफलता, तैराक, घबराहट, ललाई, रंगीला, सपेरा

- **कल्पना आधारित**

1. "कोशिश करने वालों की हार क्यों नहीं होती" का कारण स्पष्ट है कि उनका लक्ष्य साफ होता है। वे अपने लक्ष्य के प्रति चींटी की तरह संघर्ष करते रहते हैं। चींटी दाना लेकर दीवार पर चढ़ने के प्रयास में बार-बार गिरती है, फिर भी बार-बार फिसलकर गिरने के बाद फिर चढ़ती है, अंत में ऊपर चढ़कर ही मानती है। इसी प्रकार जो लोग असफलता मिलने पर भी बार-बार प्रयत्न करते हैं और हर बार अपनी असफलता से गलती में सुधार करते हैं और लक्ष्य के प्रति संवेदनशील बने रहते हैं, उनकी हार नहीं होती।
2. एक क्रिकेट टीम के कप्तान के रूप में, कड़ी मेहनत के बाद हार मिलने पर मैं शांत रहकर टीम का मनोबल बढ़ाऊँगा, हार की जिम्मेदारी लूँगा और सकारात्मक माहौल बनाए रखूँगा। मैं टीम के साथ बैठकर हार के कारणों का विश्लेषण करूँगा, खिलाड़ियों को दोष देने के बजाय उनकी गलतियों से सीखने के लिए प्रेरित करूँगा और अगले मैच के लिए एक बेहतर रणनीति बनाऊँगा।

- **खेल आधारित (बुद्धि परीक्षण)**

1. रेडियो अथवा टेलीविजन
2. लाल बहादुर शास्त्री

12. लोक संस्कृति

उच्चारण आधारित

- **शुद्ध लिखो और बोलो–**

श्रृंगार, संस्कृति, मुश्किल, मोतियों, सम्मोहित, शानदार।

पाठ आधारित

- **मौखिक**

1. पाठ में हिमाचल प्रदेश की लोक संस्कृति का वर्णन किया गया है।
2. हिमाचल प्रदेश का किन्नौर जिला अपनी परंपराओं एवं लोक संस्कृति के लिए जाना जाता है।
3. माथे पर बाँधे जाने वाले पट्टे को 'तोनोल' कहते हैं।
4. किन्नौर का मुख्य लोक नृत्य 'कयांग' के नाम से जाना जाता है।
5. महिलायें पैरों की उँगलियों में 'बांगपोल' गहना पहनती हैं।

- **लिखित**

1. हिमाचल प्रदेश सिर्फ अपने पर्यटन के लिए नहीं, बल्कि अपनी अनूठी लोक-संस्कृति के लिए भी दुनिया भर में प्रसिद्ध है।
2. ऊपरी किन्नौर की सीमा रिकांगपियो से सुमरा तक जाती है।
3. लोक-संस्कृति किसी विशेष क्षेत्र या समुदाय के लोगों की पारंपरिक रीति-रिवाज को कहते हैं।
4. किन्नौरी पारंपरिक परिधान में शामिल रहती है– किन्नौरी टोपी, शॉल, दोहडू, गाची और चोली (मखमल की हरी जैकेट)।
5. किन्नौर का प्रमुख त्योहार 'फुल्याच' महोत्सव है, जो प्रकृति परंपरा और प्रेम का प्रतीक है।

- **प्रत्यास्मरण**

1. ऊँचे-ऊँचे पहाड़ों से घिरा किन्नौर दो भागों में बँटा हुआ है- निचला किन्नौर और ऊपरी किन्नौर।
2. हिमाचल प्रदेश सिर्फ अपने पर्यटन के लिए नहीं, बल्कि अपनी अनूठी लोक संस्कृति के लिए दुनिया भर में प्रसिद्ध है।
3. किन्नौर क्षेत्र की महिलाओं का पारंपरिक श्रृंगार सबको हैरत में डाल देता है।
4. किन्नौर अपनी लोक संस्कृति तथा परंपराओं के लिए जाना जाता है।

- **अपनी समझ से**

1. (घ) लोक संस्कृति का
2. (क) दो
3. (ख) चाँदी की

4. (क) माला
5. (क) कान में

- **सोच-समझकर**

1. हिमाचल प्रदेश में गले में चंद्रहार (पारंपरिक हार) पहने महिला को देखकर लोगों के मुँह से वाह-वाह इसलिए निकलती है क्योंकि यह हार न केवल बेहद खूबसूरत और आकर्षक होता है, बल्कि यह हिमाचल की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, कला और पारंपरिक पहनावे का एक जीवंत प्रतीक भी है। यह हार सिर से पाँव तक सजे पारंपरिक लिबास को संपूर्णता देता है।
2. हिमाचल प्रदेश की संस्कृति की एक आकर्षक विशेषता यहाँ लगातार आयोजित होने वाले मेले और त्योहार हैं, जिनमें होली, दशहरा और दीवाली के साथ-साथ कई स्थानीय त्योहार भी शामिल हैं, जिन्हें बड़े उत्साह से मनाया जाता है। राज्य के सांस्कृतिक विकास में मंदिर वास्तुकला ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

   हिमाचल प्रदेश अपने हिमालयी परिदृश्यों और लोकप्रिय हिल स्टेशनों के लिए प्रसिद्ध है। रॉक क्लाइम्बिंग, माउंटेन बाइकिंग, पैराग्लाइडिंग, आइस स्केटिंग और हेली स्कीइंग जैसी कई आउटडोर गतिविधियाँ हिमाचल प्रदेश में पर्यटकों के बीच लोकप्रिय हैं। राज्य की राजधानी शिमला पर्यटकों के बीच लोकप्रिय है।

   पूरा राज्य पत्थर और लकड़ी के बने मंदिरों से सुशोभित है। समृद्ध संस्कृति और परंपराओं ने हिमाचल को अद्वितीय बना दिया है। छायादार घाटियाँ, ऊबड़-खाबड़ चट्टानें, हिमनदियाँ, विशाल चीड़ के पेड़, गर्जना करती नदियाँ और मनमोहक वनस्पति और जीव-जंतु मिलकर हिमाचल की एक ऐसी मधुर ध्वनि रचते हैं जो सदा के लिए यादगार बन जाते हैं।

   इन सब बातों ने देश में ही नहीं, विदेशी पर्यटकों को भी अपनी ओर आकर्षित किया है। यही सब कारण है कि हिमाचल प्रदेश दुनिया भर में प्रसिद्ध है।

- **सही-गलत**

  1. (✓), 2. (✗), 3. (✓), 4. (✓), 5. (✓)।

- **रिक्त स्थान पूर्ति**

1. चेहरा	4. गले
2. 'चाक'	5. गाची
3. सौंगना	

- **पाठ से आगे (मन के विचार)**

1. किसी भी समाज में संस्कृति एक आधारभूत स्तंभ है, जो पहचान, सामाजिक सामंजस्य और मूल्यों के हस्तांतरण के माध्यम से जीवन को अर्थ प्रदान करती है। यह सामाजिक सामंजस्य को बढ़ावा देती है, सामूहिक व्यवहार को अनुशासित करती है और ज्ञान को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचाकर समाज को निरंतरता और पहचान प्रदान करती है।
2. किसी क्षेत्र या समाज को विशिष्ट पहचान बनाने के लिए अपनी संस्कृति, भाषा और परंपराओं का संरक्षण करने के साथ-साथ नवाचार, शिक्षा और सामूहिक सामाजिक सेवा में संलग्न होना पड़ता है। यह पहचान साझा मूल्यों, विशिष्ट कला, शिल्प, नैतिकता और सामाजिक समानता को बढ़ावा देकर ही स्थापित की जा सकती है, जिससे वह दूसरों के लिए प्रेरणा बने।

- **भाषा आधारित**

1. **उपसर्ग लगाकर नया शब्द—**

शब्द	**उपसर्ग**	**नया शब्द**
अधिक	अति	अत्यधिक
थाह	अ	अथाह
पति	अधि	अधिपति
शासन	अनु	अनुशासन
मान	अभि	अभिमान

2. **प्रत्यय लगाकर नया शब्द**

शब्द	**प्रत्यय**	**नया शब्द**
अखबार	वाला	अखबारवाला
आदम	ई	आदमी
खेल	आड़ी	खिलाड़ी
सप्ताह	इक	साप्ताहिक
सड़ना	इयल	सड़ियल

- **कल्पना आधारित**

1. आभूषणों के बिना महिलाओं का शृंगार सादगीपूर्ण, प्राकृतिक और नैसर्गिक सुदंरता को उभारने वाला लगता है। जहाँ आभूषण बाहरी चमक-दमक बढ़ाते हैं, वहीं उनके बिना भी सुहाग के प्रतीक (बिंदी, सिंदूर),

मेंहदी, अच्छी वेशभूषा और चेहरे पर मुस्कान के साथ सौंदर्यपूर्ण हो सकता है। यह सादगी, आत्मविश्वास और शालीनता को दर्शाती है।

2. अपनी सांस्कृतिक धरोहर सुरक्षित रखने के लिए हमें ऐतिहासिक स्थलों की सफाई व संरक्षण, पारंपरिक कलाओं को बढ़ावा, युवा पीढ़ी में जागरूकता और स्थानीय विरासत के प्रति सम्मान (जैसे-स्मारकों पर न लिखना) अपनाना चाहिए। जिम्मेदार पर्यटन, कानूनी संरक्षण का समर्थन और डिजिटल माध्यमों से परंपराओं का दस्तावेजीकरण करना भी महत्त्वपूर्ण है।

- **खेल आधारित (बुद्धि परीक्षण)**

आठ प्रकार के फल-मेवों के नाम

1. अखरोट,
2. बादाम,
3. खजूर,
4. आलूबुखारा,
5. तरबूज,
6. संतरा,
7. आम,
8. केला

13. सोना

उच्चारण आधारित

- **शुद्ध लिखो और बोलो–**

स्निग्ध, अनुष्ठान, आश्वस्त, निश्चय, क्रियाशीलता, बाहुल्य।

पाठ आधारित

- **मौखिक**

1. अपनी संतान की सुरक्षा हेतु मृगी माँ ने अपने प्राण दे दिए।
2. दूध पीकर और भीगे चने खाकर सोना कुछ देर कंपाउंड में चारों पैरों को संतुलित कर चौकड़ी भरती।
3. लेखिका के घर बिल्ली गोधूलि, कुत्ते हेमंत-वसंत, कुतिया फ्लोरा पालतू पशु थे।
4. सोना ने फ्लोरा के पिल्लों को अपनी सेना में शामिल कर लिया था।
5. लेखिका बद्रीनाथ की यात्रा करने गई थी।

- **लिखित**

1. सोना का छोटा-सा मुँह और बड़ी-बड़ी नम आँखें थीं, जब वह उन्हें देखती, तो ऐसा लगता मानो वे किसी क्षण फूट पड़ेंगी। उनमें दबी हुई हलचल की बिजली सी उसकी आँखों में चमक उठती। हर कोई उसकी सरल और मासूम सूरत से इतना प्रभावित था कि चंपक रंग की सुंदरता के अनुरूप सोना, सुवर्णा, स्वर्णलेखा आदि नाम उसकी पहचान बन गए।
2. विद्यालय में प्रार्थना करने की घंटी बजने पर सोना प्रार्थना के मैदान पहुँच जाती और उसके समाप्त होने पर छात्रावास के समान ही कक्षाओं के भीतर-बाहर चक्कर लगाना आरम्भ करती।
3. बच्चों द्वारा 'सोना-सोना' पुकारने पर सोना बच्चों की पंक्ति के ऊपर से छलाँग लगाकर एक ओर से दूसरी ओर कूदती रहती।
4. एक वर्ष व्यतीत हो जाने पर सोना की टाँगें अधिक सुडौल हो गईं और खुरों के कालेपन में और चमक आ गई। गर्दन लचीली हो गई और खिंची कज्जल कोर में नीचे गोलक और दृष्टि ऐसी लगती थी, मानो नीलम के बल्बों में उजली चमक हो।
5. लेखिका के बद्रीनाथ जाने के बाद सोना को माली ने मैदान में लंबी रस्सी से बाँधना शुरू कर दिया। एक दिन बंधन की सीमा भूलकर वह ऊँचाई तक उछली और रस्सी के कारण मुँह के बल धरती पर आ गिरी। वही उसकी अंतिम साँस और अंतिम उछाल थी।

- **प्रत्यास्मरण**

1. कर्मचारी लोग लेखिका के आने के साथ ही कोई दुखद समाचार नहीं देना चाहते थे।
2. माली की भावुकता ने बिना बोले ही सब कुछ कह दिया।
3. सोना छात्रावास के सन्नाटे और फ्लोरा के तथा लेखिका के अभाव के कारण ज्यादा व्याकुल हो गयी।
4. सोना का अंत, एक दिन बंधन की सीमा भूलकर बहुत ऊँचाई तक उछली और रस्सी के कारण मुँह के बल धरती पर आ गिरी। वही उसकी अंतिम साँस और अंतिम उछाल थी, के साथ हुआ।

- **अपनी समझ से**

1. (घ) सुनहरा
2. (क) कच्ची सब्जियाँ
3. (ख) गोधूलि
4. (घ) सभी ने
5. (घ) सभी को

- **सोच-समझकर**

1. यदि बालिका उस मृतप्राय एवं अनाथ मृग शावक (सोना) को लेखिका (महादेवी वर्मा) के पास न लाती, तो वह कोमल जीव भूख, प्यास या कमजोरी के कारण निश्चित रूप से मर जाता। वह असहाय था और उसके बचने की आशा अत्यंत कम थी। ऐसे में या तो वह किसी जंगली जानवर का शिकार बन जाता या फिर अंततः दम तोड़ देता।
2. पशु-पक्षियों के साथ हमें प्रेम, करुणा और मित्रतापूर्ण व्यवहार करना चाहिए। वे बेजुबान होते हैं, इसलिए उनकी रक्षा, भरण-पोषण और सुरक्षा हमारी जिम्मेदारी है। उन्हें बिना कारण सताना नहीं चाहिए, बल्कि उनके प्राकृतिक आवास का सम्मान करना चाहिए। उनके प्रति संवेदना दिखाते हुए हमें उन्हें भोजन-पानी उपलब्ध कराना चाहिए।

- **पंक्तियों पर चर्चा (पंक्ति का भाव)**

1. महादेवी वर्मा द्वारा रचित संस्मरण रेखाचित्र 'सोना' (मृग शावक) के संदर्भ में, यह पंक्ति उस मार्मिक क्षण को दर्शाती है जब 'सोना' हिरनी की मृत्यु होती है। वह अपने जीवन की अंतिम चेष्टा के रूप में एक अंतिम उछाल लेती है और वहीं गिरकर दम तोड़ देती है, जो उसके चंचल जीवन के अचानक अंत का प्रतीक है।
2. यह पंक्तियाँ महादेवी वर्मा द्वारा रचित संस्मरण 'सोना' (मेरा परिवार) से ली गई हैं। इसमें एक अनाथ हिरनी के बच्चे (मृग शावक) को एक बालिका द्वारा लेखिका के पास लाने और उसके पालन-पोषण का वर्णन है।

- **सही-गलत**

1. (✗), 2. (✓), 3. (✓), 4. (✓), 5. (✗)।

- **रिक्त स्थान पूर्ति**

1. छलक पड़ेंगी
2. जीवित शावक
3. कुंकुम
4. बद्रीनाथ
5. भावुकता

- **पाठ से आगे (मन के विचार)**

1. यदि कोई मुझे एक मृतप्रायः (मरणासन्न) मृग शावक सौंपता है, तो मेरी पहली प्राथमिकता उसकी जान बचाने की होगी। मैं तुरंत उसे गर्म और सुरक्षित स्थान पर रखकर, प्राथमिक उपचार (जैसे- पानी या दूध पिलाना) दूँगा और बिना देरी किए वन विभाग या पशु चिकित्सक से संपर्क करूँगा।
2. अनाथ और बेसहारा पशु-पक्षियों के संरक्षण के लिए सरकार को नंदी शालाओं व आश्रय स्थलों का निर्माण, घायल पशुओं हेतु 24×7 एम्बुलेंस सेवा, नसबंदी कार्यक्रम, पशु क्रूरता कानूनों का सख्त कार्यान्वयन और स्वयंसेवी संस्थाओं को वित्तीय सहायता जैसी व्यवस्थाएँ करनी चाहिए।

- **भाषा आधारित**

1. छात्रावास – छात्रों के लिए आवास
   पंक्तिबद्ध – पंक्ति में बद्ध
   विद्यालय – विद्या के लिए आलय
   व्यथाकथा – व्यथा की कथा
   गुणहीन – गुणों से हीन
   रसोईघर – रसोई के लिए घर

   वाक्यांश के लिए एक शब्द

   अकथित, अथाह, सुनहरी, ग्रीष्मावकाश, जिज्ञासु।

- **कल्पना आधारित**

1. पशु-पक्षियों के बिना मानव जीवन नीरस, असंतुलित और भयावह हो जायेगा। हमारा सुबह का संगीत (चहचहाहट) और प्रकृति का सौंदर्य समाप्त हो जायेगा। पारिस्थितिक तंत्र टूट जाएगा, जिससे परागण की कमी, कीटों का प्रकोप, खाद्य संकट और भयंकर प्रदूषण जैसी समस्याएँ सामने आएँगी और जीवन जीना दूभर हो जाएगा।
2. यदि प्रकृति अपना कार्य (चक्र) बंद कर दे तो पृथ्वी पर जीवन तुरंत रुक जायेगा। साँस लेने के लिए स्वच्छ हवा नहीं होगी, भोजन की कमी से अकाल पड़ जायेगा और जल स्रोत सूख जाएँगे। यह एक भयावह रेगिस्तान जैसी स्थिति होगी, जहाँ हरियाली की जगह बंजर जमीन होगी और अंततः मनुष्य व पशु-पक्षी विलुप्त हो जाएँगे।

- **खेल आधारित (बुद्धि परीक्षण)**

पशु-पक्षियों के नाम– बकरी, भैंस, शेर, खरगोश, मुर्गी, हिरनी, कबूतर, बतख, टिटहरी, चकवा, नीलकंठ, गीदड़।

14. भारत कोकिला : एम. एस. सुब्बुलक्ष्मी

उच्चारण आधारित

● **शुद्ध लिखो और बोलो–**
छात्र अपने अध्यापक की सहायता से स्वयं करें।

पाठ आधारित

● **मौखिक**

1. पत्र मानवी ने निहारिका को एम. एस. सुब्बुलक्ष्मी के बारे में लिखा।
2. मानवी की नींद एम. एस. सुब्बुलक्ष्मी की मधुर आवाज से टूटी।
3. सुब्बुलक्ष्मी का जन्म 16 सितम्बर 1916 को मदुरै में हुआ।
4. एम. एस. सुब्बुलक्ष्मी के फिल्मी जीवन का आरंभ 'सेवा सदनम्' फिल्म से हुआ।
5. सुब्बुलक्ष्मी को भारत रत्न से 1998 में सम्मानित किया गया।

● **लिखित**

1. दक्षिण भारत का शहर मदुरै प्राचीन और प्रसिद्ध मंदिरों के लिए जाना जाता है।
2. सुब्बुलक्ष्मी की माँ का नाम षण्मुखवडिवु अम्माल था, जो वीणा बजाती थीं और पिता सुब्रमण्यम अय्यर एक गायक थे। इनकी दादी अक्कामल प्रसिद्ध वायलिन वादक थीं। इसलिए हम कह सकते हैं कि सुब्बुलक्ष्मी को संगीत विरासत में मिला।
3. एम. एस. सुब्बुलक्ष्मी का संगीत से परिचय उनकी माँ ने ही कराया। उन्होंने सुब्बुलक्ष्मी को पं. नारायण राव व्यास से प्रशिक्षण दिलवाया।
4. सुब्बुलक्ष्मी ने साल 1966 में यूनाइटेड नेशनल जनरल असेंबली के लिए न्यूयार्क में प्रदर्शन कर इतिहास रचा।
5. पंडित जवाहरलाल नेहरू एम. एस. सुब्बुलक्ष्मी के गीत से इतने प्रभावित थे कि उन्होंने उनके बारे में कहा– मैं कौन हूँ, एक रानी के सामने एक साधारण प्रधानमंत्री, एक संगीत की रानी।

● **प्रत्यास्मरण**

1. सरोजनी नायडू ने उन्हें भारत की कोकिला कहा।
2. पंडित जवाहरलाल नेहरू एम. एस. सुब्बुलक्ष्मी के गीत से इतने प्रभावित थे कि उन्होंने उनके बारे में कहा– मैं कौन हूँ, एक रानी के सामने एक साधारण प्रधानमंत्री, एक संगीत की रानी।
3. उस्ताद बड़े गुलाम अली खान ने सुब्बुलक्ष्मी को सुरालक्ष्मी कहा।
4. 'तपस्विनी' कहकर सुब्बुलक्ष्मी को स्वर साम्राज्ञी लता मंगेशकर ने संबोधित किया।

● **अपनी समझ से**

1. (ग) वायलिन वादिका
2. (ग) मीरा
3. (क) एम. एस. सुब्बुलक्ष्मी
4. (घ) सन् 1938 में
5. (क) 11 दिसंबर 2024

● **सोच-समझकर**

1. एम. एस. सुब्बुलक्ष्मी ने फिल्मों में अभिनय इसलिए बंद कर दिया क्योंकि वे अपना संपूर्ण जीवन शास्त्रीय और गायन के लिए समर्पित करना चाहती थीं। उनका मुख्य ध्यान और रुचि अभिनय के बजाय संगीत कला पर थी। 1945 में 'मीरा' जैसी सफल फिल्म के बाद, उन्होंने अभिनय से पूरी तरह दूरी बना ली।
2. प्रसिद्ध व्यक्तित्वों के उनके असाधारण योगदान, उपलब्धियों और समाज पर सकारात्मक प्रभाव के लिए विभिन्न सम्मान दिए जाते हैं। यह सम्मान विशिष्ट प्रतिभा को पहचानने, उत्कृष्ट कार्य को प्रोत्साहित करने, दूसरों को प्रेरित करने, उच्च नैतिक मूल्य स्थापित करने और राष्ट्र के सामाजिक, सांस्कृतिक व वैज्ञानिक विकास में योगदान को मान्यता देने के लिए प्रदान किए जाते हैं।
3. किसी क्षेत्र में सफलता और प्रसिद्धि पाने के लिए कड़ी मेहनत, दृढ़ता और आत्म-अनुशासन सबसे महत्त्वपूर्ण गुण हैं। सफलता के लिए लक्ष्य निर्धारण, आत्मविश्वास, समय प्रबंधन और असफलता से न डरकर सीखने का लचीलापन भी

अनिवार्य है। इसके अलावा विनम्रता, ईमानदारी, जुनून और निरंतर सीखते रहने की इच्छा आपको विशिष्ट बनाती है।

- **सही मिलान**

  1. (ङ), 2. (घ), 3. (ग), 4. (ख) 5. (क)।

- **सही-गलत**

  1. (✗), 2. (✓), 3. (✗), 4. (✓), 5. (✗)।

- **रिक्त स्थान पूर्ति**

1. 2024
2. भारत रत्न
3. षण्मुखवडिवु अम्माल
4. पं. नारायण राव व्यास
5. 1974

- **पंक्तियों पर चर्चा**

1. "आवाज का जादू मुझ पर इस कदर छाया था" वाक्यांश किसी के स्वर या गायन के प्रति अत्यधिक आकर्षण और सम्मोहन को दर्शाता है। मानवी ने जब सुब्बुलक्ष्मी का मधुर गाना सुना तो यकायक उसके मुँह से ये शब्द निकले।
2. एम. एस. सुब्बुलक्ष्मी को संगीत वास्तव में विरासत में मिला था, क्योंकि उनका जन्म मदुरै के एक देवदासी परिवार में हुआ था जहाँ संगीत जीवन का हिस्सा था। उनकी माँ वीणा वादक षण्मुखवडिवु, उनकी पहली गुरु थीं। उन्होंने शास्त्रीय संगीत की शिक्षा कम उम्र में ही शुरू कर दी थी और 13 साल की उम्र में मंच पर प्रस्तुति देना शुरू कर दिया था।

   सुब्बुलक्ष्मी ने न केवल विरासत को संभाला, बल्कि उसे अपनी दिव्य आवाज से नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया।
3. एम. एस. सुब्बुलक्ष्मी (1916-2004) कर्नाटक संगीत की एक दिग्गज गायिका थीं, जिन्हें "संगीत की रानी" और भारत रत्न (सर्वोच्च नागरिक सम्मान) प्राप्त करने वाली पहली संगीतकार होने का गौरव प्राप्त है। 1966 में संयुक्त राष्ट्र (UN) में प्रस्तुति देने वाली पहली भारतीय संगीतकार के रूप में, उन्होंने शास्त्रीय संगीत को वैश्विक पहचान दिलाई। उनके गायन में भक्ति और रागों का अद्भुत संगम था, जो आज भी अमर है।

- **पाठ से आगे (मन के विचार)**

1. मेरा पसंदीदा संगीतकार पंडित रविशंकर हैं। सितार के जादूगर के रूप में प्रसिद्ध, उन्होंने भारतीय शास्त्रीय संगीत को वैश्विक मंच पर लोकप्रिय बनाने में अहम भूमिका निभाई और पश्चिमी संगीत के साथ फ्यूजन के प्रयोग भी किए। उनका संगीत भावनात्मक रूप से गहरा और तकनीकी रूप से अत्यंत परिष्कृत होता है, जो श्रोताओं को शांति और ऊर्जा का अद्भुत अनुभव प्रदान करता है।

   उनके संगीत में एक विशेष प्रकार की आत्मा है, जो मन को सुकून और आत्मा को शांति प्रदान करती है।
2. मन में उठी जिज्ञासा का समाधान खोजने के लिए मैं अक्सर अपने माता-पिता, शिक्षकों या वरिष्ठ और अनुभवी लोगों से बात साझा करता हूँ। जब उन लोगों से उत्तर नहीं मिलता तो मैं पुस्तकों, ज्ञानकोषों, इंटरनेट या विश्वसनीय वेबसाइटों के माध्यम से अपनी जिज्ञासा शांत करता हूँ।

   जिज्ञासा हमें निरंतर सीखने और नई खोज करने के लिए प्रेरित करती है।

- **भाषा आधारित**

1. (क) सिपाही ने चोर को पकड़ा। वाक्य में **<u>सिपाही</u>** कर्ता कारक है।

   (ख) रमेश ने मोहन को पत्र लिखा। वाक्य में **<u>मोहन</u>** कर्म कारक है।

   (ग) राम ने कलम से पत्र लिखा। वाक्य में **<u>कलम से</u>** करण कारक है।

   (घ) यह पुस्तक मोहन की है। वाक्य में **<u>मोहन की</u>** संबंध कारक है।

   (ङ) हे राम! मेरी पुकार सुनो। वाक्य में **<u>हे राम!</u>** सम्बोधन कारक है।
2. (क) तुम तो बहुत अच्छे हो। वाक्य में **<u>तो</u>** निपात है।

(ख) यह काम दस बजे तक खत्म हो जायेगा। वाक्य में **तक** निपात है।

(ग) केवल तुम ही यह कर सकते हो। वाक्य में **ही** निपात है।

(घ) आज दिन भर सोते ही रहोगे। वाक्य में **ही** निपात है।

3. उपवन = बगिया, देश = वतन,
मित्र = सखा, दिन = दिवस,
संसार = दुनिया, समुद्र = सागर

4. (क) बच्चों ने बड़े **उत्साह** से दीपावली का त्योहार मनाया।

(ख) सच्ची **लगन** से इंसान अपना लक्ष्य प्राप्त कर सकता है।

(ग) जादूगर ने अपने **जादू** से सबको हैरान कर दिया।

(घ) लता मंगेशकर की **आवाज** बहुत सुरीली थी।

- **कल्पना आधारित**

1. संगीत के क्षेत्र में प्रसिद्ध होने के लिए, निरंतर रियाज (अभ्यास), पेशेवर प्रशिक्षण और नेटवर्किंग सबसे महत्त्वपूर्ण है। आपको अपनी गायकी/वादन शैली को निखारना, संगीत के सिद्धान्तों को समझना, सोशल मीडिया पर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन कर और पेशेवरों के साथ संबंध बनाकर अवसर तलाशने होंगे। इन तैयारियों के साथ, धैर्य और दृढ़ता से हम संगीत की दुनिया में अपनी पहचान बना सकते हैं।

2. **साक्षात्कार के लिए संभावित प्रश्न**

1. संगीत की दुनिया में आने की प्रेरणा आपको कहाँ से मिली?
2. आपका पहला गायन अनुभव कैसा था?
3. क्या संगीत आपकी पारिवारिक विरासत है या आपने खुद इसे चुना?
4. आपके गीतों की रचना प्रक्रिया क्या है? क्या पहले शब्द आते हैं या धुन?
5. क्या किसी रचना को पूरा करने में आपको किसी विशेष चुनौती का सामना करना पड़ता है?
6. अब तक का सबसे यादगार लाइव प्रदर्शन कौन-सा रहा है और क्यों?
7. आप अपने संगीत को किन शब्दों में परिभाषित करेंगे?
8. नये उभरते कलाकारों को आप क्या सलाह देंगे?

इन प्रश्नों से संगीतकार के व्यक्तित्व और उनके कलात्मक दृष्टिकोण की एक गहरी तस्वीर सामने आएगी।

- **खेल आधारित**

वीणा, शहनाई, बाँसुरी, ढोलक, तबला, हारमोनियम।

15. झाँसी की रानी

उच्चारण आधारित

- **शुद्ध बोलो और लिखो–**

स्वतंत्रता, सिंहनी, विषम, मर्दानी, आजादी, तलवार।

पाठ आधारित

- **मौखिक**

1. रानी लक्ष्मीबाई की तलवार सन् सत्तावन में फिर चमक उठी थी।
2. झाँसी वाली रानी का लक्ष्मीबाई नाम था।
3. युद्ध में जख्मी होकर लेफ्टिनेंट वॉकर भाग गया था।
4. युद्ध क्षेत्र में रानी की काना और मुंदरा नाम की सखियाँ साथ थीं।
5. अंग्रेजों से युद्ध करते समय रानी की उम्र तेईस वर्ष थी।

- **लिखित**

1. सभी भारतीयों ने खोई हुई आजादी की कीमत समझ ली थी और अंग्रेजों (फिरंगी) को देश से बाहर निकालने का पक्का मन बना लिया था।

2. हमने झाँसी वाली रानी की कहानी बुंदेलखण्ड के लोक गायकों (हरबोलों) के मुँह से सुनी थी।
3. डलहौजी तब मन ही मन हरषाया (प्रसन्न हुआ) जब 1853 में झाँसी के महाराजा गंगाधर राव का निधन हो गया और उनका कोई प्राकृतिक वारिस नहीं था।
4. ग्वालियर के तत्कालीन महाराजा सिंधिया ने अंग्रेजों का साथ देने के लिए रानी लक्ष्मीबाई का साथ छोड़ दिया था।
5. स्वतंत्रता की नारी लक्ष्मीबाई को कहा गया है, क्योंकि केवल तेईस वर्ष की आयु में लक्ष्मीबाई एक अवतार की तरह आईं, जो गुलामी में जी रहे भारतीयों में स्वतंत्रता की नई चेतना और जोश भरने का माध्यम बनीं।

● **प्रत्यास्मरण**

संदर्भ एवं प्रसंग– प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी हिंदी की पाठ्य-पुस्तक 'उमंग' से सुभद्रा कुमारी चौहान द्वारा रचित कविता 'झाँसी की रानी' से ली गई हैं। इन पंक्तियों में कवयित्री रानी लक्ष्मीबाई के अंतिम समय का वर्णन कर रही हैं, जब वे युद्ध के मैदान में वीरगति को प्राप्त होती हैं। वे उनके बलिदान को एक दिव्य मिलन के रूप में प्रस्तुत कर रही हैं।

व्याख्या– रानी लक्ष्मीबाई युद्ध भूमि में लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुईं (सिधार गईं) और उनकी चिता उनकी अंतिम सवारी बनी, जिसे कवयित्री ने दिव्य कहा है। उन्होंने कहा कि रानी का तेज (वीरता और ओज) साक्षात ईश्वर के तेज में मिल गया है, क्योंकि वह सच में उस असीम तेज की पात्र थीं। केवल तेईस वर्ष की अल्पायु में उन्होंने जो वीरता दिखाई, वह सामान्य मनुष्य की नहीं, बल्कि साक्षात अवतार लग रही थीं। वे स्वतंत्रता की देवी बनकर भारतवासियों में नई जान फूँकने आई थीं, उन्होंने सही रास्ता दिखाया और वह सीख दे गईं जिसकी देश को जरूरत थी। हरबोलों (गायक जाति) के मुँह से हमने यह कहानी सुनी है कि वह मर्दों जैसी वीरता से लड़ने वाली झाँसी की रानी थीं।

● **अपनी समझ से**

1. (ग) बुंदेले हरबोले
2. (क) नाना
3. (घ) (ख) और (ग) दोनों
4. (क) लक्ष्मीबाई
5. (क) वैभव के

● **सोच-समझकर**

1. यदि रानी लक्ष्मीबाई और उनकी सेना ने अंग्रेजों का सामना नहीं किया होता, तो झाँसी को 1858 में ही बहुत पहले ही, बिना किसी खास प्रतिरोध के ब्रिटिश साम्राज्य में मिला लिया जाता। रानी को अपनी सत्ता सम्मान और गोद लिए पुत्र दामोदर राव के उत्तराधिकार से वंचित होना पड़ता। झाँसी अपनी स्वतंत्रता खो देता और प्रजा को अंग्रेजों के अधीन घोर शोषण व अत्याचारों का सामना करना पड़ता।
2. बुंदेले हरबोलों ने रानी लक्ष्मीबाई के अदम्य साहस, वीरता और अंग्रेजों के खिलाफ अंतिम साँस तक लड़ी गई जंग को लोक गीतों (आल्हा शैली) में अमर किया है। वे रानी को 'मर्दानी', 'झाँसी वाली रानी' और 'स्वतंत्रता की मशाल' कहकर उनकी वीरता का वर्णन करते होंगे, जिसमें स्वाभिमान, बलिदान और युद्ध का दृश्य प्रमुख होता है।

● **भाव चर्चा**

1. सुभद्रा कुमारी चौहान द्वारा रचित कविता की यह पंक्ति 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के दौरान भारतवासियों में जागी राष्ट्रप्रेम की चेतना को दर्शाती है। इसका भाव यह है कि अंग्रेजों की दमनकारी नीतियों के कारण जब देशी राजाओं और आम जनता ने अपना सुख-चैन और स्वतंत्रता खो दी, तब सबको आजादी का मूल्य समझ में आया और वे फिरंगी (अंग्रेजों) को देश से बाहर निकालने के लिए एकजुट हो गए।

2. यह पंक्ति सुभद्रा कुमारी चौहान द्वारा रचित प्रसिद्ध कविता 'झाँसी की रानी' से ली गई है।

भावार्थ – इस पंक्ति का अर्थ है कि लक्ष्मीबाई का व्यक्तित्व कोमल नहीं, बल्कि अत्यंत वीरांगना और साहसी था। कवयित्री ने तलवार और चूड़ियों के माध्यम से रानी के पौरुष (वीरता) को उजागर किया है। वे कहना चाहती हैं कि जिनके हाथ शत्रुओं

का नाश करने के लिए बने हों, वे चूड़ियाँ पहनकर घर में नहीं बैठ सकते। युद्ध क्षेत्र में रानी ने जब तलवार उठाई, तब उन्होंने दिखा दिया कि वे एक मर्दानी (वीर सैनिक) हैं, न कि कोई अबला। उनके लिए चूड़ियों से बेहतर तलवार थी, अर्थात् संघर्ष और आजादी की लड़ाई।

संक्षेप में, यह पंक्ति रानी लक्ष्मीबाई की वीरता, अदम्य साहस और युद्ध कला में उनकी निपुणता को रेखांकित करती है।

3. "खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।" सुभद्रा कुमारी चौहान द्वारा रचित यह पंक्ति 1857 की रानी लक्ष्मीबाई की अदम्य वीरता, शौर्य और देशभक्ति का गुणगान करती है। इसका अर्थ है कि वह झाँसी की रानी एक वीर पुरुष (मर्दानों) की भाँति अंग्रेजों से जमकर लड़ी और उन्होंने अपने साहस से पुरुषों को भी पीछे छोड़ दिया, जिससे वे भारतीय इतिहास में अमर हो गईं।

भावार्थ – रानी लक्ष्मीबाई ने युद्ध के मैदान में पुरुषों की तरह (मर्दानी होकर) अंग्रेजों से मुकाबला किया। यह पंक्ति 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में झाँसी के युद्ध का वर्णन करती है। यह महिलाओं की ताकत और साहस को दर्शाती है। यह पंक्तियाँ उस ऐतिहासिक संघर्ष को याद करती हैं, जहाँ रानी ने अपने राज्य और देश की रक्षा के लिए अंत तक संघर्ष किया।

4. हरबोलों का अर्थ बुंदेलखण्ड के पारंपरिक गायकों से है जो ऐतिहासिक गाथाएँ गाते हैं। यह पंक्ति उनके द्वारा गाई गई गाथाओं पर आधारित है। यह पंक्ति रानी लक्ष्मीबाई के साहस, पराक्रम और अंग्रेजों के खिलाफ उनकी लड़ी गई लड़ाई की याद दिलाती है, जिन्होंने मर्दों की तरह युद्ध किया। इस कविता ने लोगों में देशभक्ति की लौ जलाई और यह स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान बहुत लोकप्रिय हुई।

5. "दिखा गई पथ सिखा गई, हमको जो सीख सिखानी थी।" पंक्ति का भावार्थ है कि झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई ने अपने जीवन और संघर्ष से हमें स्वतंत्रता, वीरता और स्वाभिमान का मार्ग दिखाया।

- **रिक्त स्थान पूर्ति**

1. जवानी,
2. लक्ष्मीबाई
3. डलहौजी
4. ग्वालियर
5. तेज

- **पाठ से आगे (मन के विचार)**

1. यदि मैं रानी लक्ष्मीबाई के स्थान पर होती, तो मैं भी अंग्रेजों के सामने समर्पण न करके "मैं अपनी झाँसी नहीं दूँगी" के प्रण के साथ साहसपूर्वक लड़ी होती। मैं भारतीय सैनिकों को एकजुट करती, गोरिल्ला युद्ध नीति का उपयोग करती और स्वतंत्रता के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर कर देती।
2. यदि लक्ष्मीबाई जैसी अनेक वीरांगनाएँ (जैसे– झलकारी बाई, बेगम हजरत महल) 1857 में एक साथ अंग्रेजों का सामना करतीं, तो अंग्रेजों की दशा अत्यन्त दयनीय हो जाती और भारत बहुत पहले आजाद हो सकता था। अंग्रेजों को भारी जन-धन की हानि होती, उनका मनोबल टूट जाता और उन्हें जल्द ही भारत छोड़कर भागना पड़ता, क्योंकि रानी लक्ष्मीबाई जैसी नेतृत्व क्षमता और अदम्य साहस का सामना करना, अंग्रेजों के लिए नामुमकिन था।

- **भाषा आधारित**

1. विपरीतार्थक शब्द

पुरानी	– नई	सिंहनी	– सिंह
घोड़ा	– घोड़ी	नाला	– नदी
रानी	– राजा	आशा	– निराशा
छात्रा	– छात्र	विच्छेद	– संधि

2. मुहावरों का वाक्यों में प्रयोग

(क) अँगूठा दिखाना – उसने मदद के समय **अँगूठा दिखा दिया**।

(ख) दाल में कुछ काला होना – श्याम के अचानक अमीर बनने की बात सुनकर सभी लोगों को लगा कि **दाल में कुछ काला** है।

(ग) काली घटा घिरना – जब से राजा की मृत्यु हुई, रानी के जीवन में **काली घटा घिर आई**।

(घ) मुँह की खाना – कारगिल युद्ध में पाकिस्तानी सेना को **मुँह की खानी पड़ी**।

- **कल्पना आधारित**

1. यदि राजा गंगाधर राव जीवित होते, तो रानी लक्ष्मीबाई को अंग्रेजों के खिलाफ 1857 के युद्ध में उतरने का सीधा अवसर शायद न मिलता। तब झाँसी एक रियासत के रूप में बनी रहती, न कि हड़प नीति के तहत अंग्रेजों द्वारा छीनी जाती।
2. यदि रानी लक्ष्मीबाई को बचपन में घुड़सवारी, तलवारबाजी और युद्ध कौशल की शिक्षा नहीं मिली होती, तो उनका एक योद्धा के रूप में अंग्रेजों का मुकाबला करना और 1857 के स्वतंत्रता संग्राम की एक महान नायिका के रूप में इतिहास बनना लगभग असंभव होता। शिक्षा और शारीरिक प्रशिक्षण ने ही उन्हें एक निडर नेता बनाया।

- **खेल आधारित (बुद्धि परीक्षण)**

(क) कमल ककड़ी – कल, कड़ी, मल, मकड़ी, लक (लाख या किस्मत)।

(ख) राजमहल – राम, जल, हल, जरा, हज, महल, राज।

16. पर्यावरण प्रदूषण : गम्भीर समस्या

उच्चारण आधारित

छात्र कक्षा अध्यापक की सहायता से स्वयं करें।

पाठ आधारित

- **मौखिक**

1. निशा ने अपनी कक्षा अध्यापिका को बताया कि 'कितनी जोर से बारिश हो रही है, मैम'।
2. शिक्षिका ने बेमौसम की बरसात का पर्यावरण प्रदूषण कारण बताया।
3. पर्यावरण के अंगों के नाम– वायु, जल, वनस्पति-जगत के साथ ही भूमि, नदी, पशु-पक्षी तथा खनिज सम्पदा भी पर्यावरण के अंग हैं।
4. पाठ में प्रदूषण के चार कारण बताए हैं, जो इस प्रकार हैं– वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण और मृदा प्रदूषण।
5. भूमि प्रदूषण से मानवों में त्वचा कैंसर, श्वसन संबंधी बीमारियाँ तथा वन्य जीवों का विस्थापन, भूजल का दूषित होना और मिट्टी की उर्वरता में कमी आदि प्रभाव दिखाई देते हैं।

- **लिखित**

1. वायु को प्रदूषित करने में मानव सबसे आगे है। विकास की चाह में लगाए गए बड़े-बड़े कल-कारखाने अत्यधिक धुआँ उगल रहे हैं। वायु प्रदूषण का अर्थ है-हानिकारक गैसों, धूल के कणों और धुएँ का मिलना। इसके प्रमुख कारणों में वाहनों का धुआँ, औद्योगिकीकरण और निर्माण-कार्य शामिल हैं। इसे रोकने के लिए सार्वजनिक परिवहन का उपयोग, अधिक पेड़ लगाना, सौर ऊर्जा को अपनाना, कारखानों के उत्सर्जन को कम करना और कचरा न जलाना सबसे प्रभावी उपाय हैं। इन उपायों को अपनाकर हम हवा की गुणवत्ता में सुधार कर सकते हैं और एक स्वस्थ भविष्य की ओर बढ़ सकते हैं।
2. मनुष्य की अनियंत्रित गतिविधियों, आधुनिकता की अंधी दौड़ और संसाधनों के अंधाधुंध दोहन ने प्राकृतिक संतुलन को तहस-नहस कर दिया है। वनों की कटाई, औद्योगिकीकरण, प्लास्टिक और कचरा प्रबंधन का अभाव, कृषि में रसायनों के उपयोग से जल स्रोत प्रदूषित हो रहे हैं।

   मनुष्य के लालच और असीमित आवश्यकताओं के कारण प्रकृति का दोहन हुआ है, न कि पोषण। जहाँ प्रकृति स्वयं को पुनर्जीवित कर सकती है, वहीं मानव निर्मित प्रदूषक इतने अधिक हैं कि पर्यावरण अब उन्हें सहने में असमर्थ है, जिससे स्पष्ट है कि इस संकट के लिए मुख्य रूप से मनुष्य ही जिम्मेदार है।
3. जल प्रदूषण से तात्पर्य नदियों, झीलों, महासागरों और भूजल जैसे जल निकायों के हानिकारक पदार्थों (औद्योगिक कचरा, सीवेज, रसायनों) से दूषित होने से है। यह मानवीय गतिविधियों के कारण होता है, जिससे पानी की गुणवत्ता गिर जाती है और यह पीने, नहाने या कृषि के लिए असुरक्षित हो जाता है, जो जलीय जीवन और मानव स्वास्थ्य के लिए खतरनाक है।

   जल प्रदूषण का मुख्य कारण – औद्योगिक अपशिष्ट (कारखानों का जहर),

कृषि अपवाह (कीटनाशक, उर्वरक), अनुपचारित सीवेज (मलजल) और प्लास्टिक कचरा मुख्य कारक हैं।

प्रभाव– इससे हैजा, टाइफाइड जैसी बीमारियाँ फैलती हैं, जलीय पारिस्थितिकी तंत्र नष्ट होता है और 'डेड जोन' (जहाँ जीवन संभव नहीं है) बन जाते हैं।

समाधान– सीवेज उपचार, रसायनों का कम उपयोग, प्लास्टिक पर प्रतिबंध और जल निकायों में कचरा फेंकने से बचना ही उसके नियंत्रण के उपाय हैं। यह गंभीर पर्यावरणीय चुनौती है जो पीने योग्य पानी की सीमित मात्रा को नष्ट कर रही है।

4. ध्वनि प्रदूषण मानव स्वास्थ्य के लिए एक गंभीर खतरा है जो न केवल सुनने की क्षमता को कम करता है, बल्कि उच्च रक्तचाप, मानसिक तनाव, अनिद्रा और हृदय रोगों का कारण बनता है। लगातार शोर से बच्चों में एकाग्रता की कमी, सिरदर्द, चिड़चिड़ापन और तंत्रिका तंत्र पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।
5. शुद्ध वायु में गैसों का प्रतिशत (आयतन के अनुसार)

   नाइट्रोजन– लगभग 78.08 प्रतिशत

   ऑक्सीजन– लगभग 20.95 प्रतिशत (लगभग 21 प्रतिशत)

   आर्गन– लगभग 0.93 प्रतिशत

   कार्बन डाइ-ऑक्साइड– लगभग 0.04 प्रतिशत

   अन्य सूक्ष्म गैसें– निऑन, हीलियम, क्रिप्टन और हाइड्रोजन बहुत ही कम मात्रा में (कुल 0.01 प्रतिशत से कम)

   जलवाष्प– यह स्थान और समय के अनुसार 0 से 4 प्रतिशत तक बदलती रहती है, लेकिन शुष्क वायु में यह नगण्य होती है। यह संरचना पृथ्वी के वायुमण्डल को स्थिर रखने और जीवन के लिए आवश्यक है।

- **प्रत्यास्मरण**

1. प्रदूषण को रोकने के लिए अंधाधुंध बढ़ती जनसंख्या पर भी रोक लगाना आवश्यक है।
2. सन् 1947 में भारत की जनसंख्या केवल 32 करोड़ थी।
3. बढ़ती हुई आबादी की अन्न, जल, फल, आवास, वस्त्र आदि आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए वनों को बड़े पैमाने पर काटा जा रहा है।
4. बढ़ती जनसंख्या पर नियंत्रण किया जाये तो प्रदूषण की समस्या काफी हद तक स्वयं सुलझ जाएगी।

- **अपनी समझ से**

1. (घ) 32 करोड़
2. (ख) चार
3. (ख) पर्यावरण प्रदूषण को
4. (क) वृक्षों का कटना
5. (घ) 20.95%

- **सोच-समझकर**

1. प्रदूषण नियंत्रण का खतरा तेजी से बढ़ते औद्योगिकीकरण, वाहनों के बेहिसाब इस्तेमाल, जनसंख्या वृद्धि, वनों की कटाई और अपर्याप्त कचरा प्रबंधन के कारण लगातार बढ़ रहा है। विकास की अंधी दौड़ में पर्यावरण को नजरअंदाज करना, पुराने वाहनों का चलना और रासायनिक खेती से जमीन-पानी का विषैला होना इस गंभीर स्थिति के मुख्य कारण हैं।
2. पर्यावरण को स्वच्छ बनाने के लिए व्यक्तिगत प्रयास बहुत महत्त्वपूर्ण हैं। इसके लिए प्लास्टिक का उपयोग बंद करना, अधिक से अधिक पेड़ लगाना, पानी और बिजली बचाना, कचरे का सही निस्तारण करना (कम्पोस्टिंग) और सार्वजनिक परिवहन का उपयोग करना सबसे प्रभावी तरीके हैं। व्यक्तिगत स्तर पर आदतें बदलकर हम प्रदूषण कम कर सकते हैं।
3. वृक्षों की कटाई और पर्यावरण प्रदूषण का सीधा और गहरा संबंध है क्योंकि पेड़ प्राकृतिक एयर प्यूरीफायर (वायुशोधक) हैं। इनकी कमी से वायुमंडल में CO_2 बढ़ती है (ग्लोबल वार्मिंग) और ऑक्सीजन कम होती है। साथ ही वनों के विनाश से मृदा अपरदन, जल स्तर में गिरावट और जैव विविधता का विनाश होता है जो अंततः विनाशकारी जलवायु परिवर्तन को जन्म देता है।

- **सही-मिलान**

1. (स), 2. (द), 3. (य), 4. (ब), 5. (अ)।

- **सही-गलत**

1. (✓), 2. (✗), 3. (✓), 4. (✗), 5. (✓)।

- **रिक्त स्थान पूर्ति**

1. वायु
2. 78.09
3. पेट
4. पर्यावरण
5. विश्व

- **पंक्तियों पर चर्चा**

1. "प्रदूषण का खतरा निरंतर बढ़ता ही जा रहा है।" पंक्ति का भावार्थ यह है कि आधुनिक औद्योगीकरण, शहरीकरण और अनियंत्रित उपभोग के कारण हमारे पर्यावरण (हवा, पानी, मिट्टी) में हानिकारक तत्वों की मात्रा लगातार बढ़ रही है। यह समस्या थमने के बजाय तेजी से विकराल रूप ले रही है जो मानव स्वास्थ्य और संपूर्ण पारिस्थितिक तंत्र के लिए एक विनाशकारी चुनौती बन गई है। वायु, जल और मृदा तीनों ही प्रदूषित हो चुके हैं जिससे जीवन का अस्तित्व खतरे में पड़ गया है।
2. यह कथन पूर्णतः सत्य है कि मनुष्य ने अपने तुच्छ स्वार्थों जैसे कि शहरीकरण, औद्योगीकरण और कृषि विस्तार के लिए हरे-भरे वृक्षों की अंधाधुंध कटाई की है। इसके परिणामस्वरूप वायु, जल और मृदा प्रदूषण में तीव्र वृद्धि हुई है जिससे जलवायु परिवर्तन वन्यजीवों के विलुप्त होने और स्वास्थ्य संबंधी बीमारियों का खतरा बढ़ गया है।
   पेड़ कार्बन डाइऑक्साइड को अवशोषित कर प्राणवायु (ऑक्सीजन) छोड़ते हैं; इनकी कमी से हवा में हानिकारक गैसें बढ़ रही हैं। प्रदूषण के कारण मनुष्यों में साँस संबंधी और अन्य गंभीर बीमारियाँ फैल रही हैं।
   पर्यावरण संरक्षण के लिए अधिक से अधिक वृक्षारोपण करना और सतत विकास को अपनाना अत्यंत आवश्यक है।
3. "प्रकृति के संतुलन को बिगाड़ने में मनुष्य की बहुत बड़ी भूमिका है।" पंक्ति का भाव यह है कि आधुनिकता और स्वार्थ के कारण मनुष्य ने पर्यावरण को सबसे अधिक नुकसान पहुँचाया है। वनों की कटाई, औद्योगीकरण प्रदूषण और प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक दोहन से पारिस्थितिक संतुलन बिगड़ गया है। यह मानवीय गतिविधियाँ ग्लोबल वार्मिंग आपदाओं और प्रजातियों के विलुप्त होने का कारण बन रही हैं।
   संक्षेप में, यह पंक्ति मनुष्य को उसके द्वारा प्रकृति पर किए जा रहे अत्याचारों के प्रति सचेत करती है।

- **पाठ से आगे (मन के विचार)**

1. औद्योगिकीकरण पर्यावरण के लिए अत्यधिक हानिकारक है क्योंकि यह वायु, जल और मृदा प्रदूषण का प्रमुख स्रोत है जो पारिस्थितिक तंत्र को तबाह कर रहा है। यह हानिकारक गैसों, जहरीले अपशिष्ट और वनों की कटाई के माध्यम से जलवायु परिवर्तन, जैवविविधता में कमी और प्राकृतिक संतुलन को बिगाड़ रहा है।
2. एक छात्र होने के नाते मैं "कम करें, पुनः उपयोग करें और पुनर्चक्रित करें।" (3R) के सिद्धांत को अपनाकर व्यक्तिगत जागरूकता फैलाकर और छोटे-छोटे पर्यावरणीय कदम उठाकर प्रदूषण से निपटूँगा। मैं सार्वजनिक परिवहन/साइकिल का उपयोग, प्लास्टिक निषेध, वृक्षारोपण और ऊर्जा संरक्षण (बिजली बचाना) जैसी आदतों को अपनी जीवनशैली में अपनाकर सकारात्मक बदलाव लाऊँगा।
3. साफ-सफाई (स्वच्छता) स्वस्थ, सुखी और अनुशासित जीवन का आधार है जो न केवल शारीरिक बीमारियों को दूर रखती है बल्कि मानसिक शांति और सकारात्मक ऊर्जा भी प्रदान करती है। यह व्यक्तिगत और सामाजिक विकास के लिए आवश्यक है जिससे बीमारियाँ कम होती हैं, पैसे की बचत होती है और एक सभ्य व्यवस्थित वातावरण का निर्माण होता है।

- **भाषा आधारित**

1. **(क) सीवेज–** नगरपालिका ने शहर के सीवेज (गंदे पानी) को सीधे नदी में बहाने पर रोक लगा दी है।
   (ख) फिल्टर– पानी पीने से पहले उसे फिल्टर करना चाहिए।
   (ग) ऑक्सीजन– पेड़-पौधे हमें जीवनरक्षक ऑक्सीजन प्रदान करते हैं।

(घ) रेडियो– पुराने समय में मनोरंजन का साधन रेडियो ही होता था।

(ङ) कैंसर– धूम्रपान की लत के कारण उसे फेफड़ों का कैंसर हो गया।

2. **समानार्थी शब्द**

सूर्य – रवि, सूरज, प्रभाकर, भानु
मित्र – सखा, दोस्त, संगी, सहचर
सुंदर – खूबसूरत, हसीन, आकर्षक, मनोहर
पानी – जल, नीर, जीवन, आब
दुख – कष्ट, पीड़ा, व्यथा, वेदना
ध्वनि – आवाज, नाद, स्वर, निर्घोष

3. **प्रत्यय शब्द**

प्रत्यय	शब्द
ता	मित्रता, मानवता
आवट	सजावट, थकावट
औनी	सलौनी, घिनौनी
अनीय	पठनीय, आदरणीय

4. **क्रिया विशेषण**

(क) कल, (ख) बाहर, (ग) धीरे-धीरे, (घ) बहुत।

● **कल्पना आधारित**

1. विकसित देशों में तकनीक के बावजूद पर्यावरण प्रदूषण (जैसे- उच्च कार्बन उत्सर्जन, ई-कचरा) प्रमुख समस्या है क्योंकि वहाँ की जीवन शैली अत्यधिक उपभोगवादी है। औद्योगिक उत्पादन और ऊर्जा की माँग बहुत अधिक है और ऐतिहासिक रूप से हुआ औद्योगीकरण लंबे समय से प्रदूषण बढ़ा रहा है। तकनीकी विकास अक्सर प्रदूषण को कम करने के बजाय उत्पादन बढ़ाने में लग जाता है। तकनीकी रूप से आगे होने के बावजूद उन देशों में आर्थिक वृद्धि और प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के बीच संतुलन बनाना अभी भी एक बड़ी चुनौती है।

2. स्वच्छ, हरित एवं स्वच्छ वायुमंडल में जीवन की कल्पना एक आदर्श शांत और स्वस्थ दुनिया की कल्पना है, जहाँ मनुष्य और प्रकृति एक-दूसरे के पूरक बनकर रहते हैं। ऐसे माहौल में साँस लेना ही अपने आप में एक सुखद अनुभव होगा।

● **खेल आधारित**

छात्र स्वयं हल करें।

●●

जाँच प्रश्न-पत्र-1

1. **प्रश्नों के उत्तर–**

(क) सरस्वती के पावन मंदिर का रक्षक और पुजारी हर बालक है।

(ख) आराध्या के हाथ-पैर कमजोर थे, इसलिए बच्चों के साथ खेल नहीं सकती थी।

(ग) बेबी ने अपने मन में यह दृढ़ निश्चय कर लिया कि वह उस गरीब पोस्टमैन को नंगे पैर नहीं रहने देगी।

(घ) यदि 'कमाल की होली' कार्यक्रम में शामिल होता तो मैं 'आलस' नामक बुराई को अग्निकुंड में समर्पित करता।

(ङ) मैं जाति-पाँति के भेदभाव, धार्मिक आडंबरों, अंधविश्वासों और हिन्दू-मुस्लिम साम्प्रदायिकता का विरोध करूँगा।

2. **प्रश्नों के उत्तर–**

(क) सहेली बतख का नाम था।

(ख) ठीक होने के बाद सहेली घर में एक कमरे से दूसरे कमरे में उड़ती रहती थी।

(ग) आराध्या के पिताजी उसे नहर के पास वाले पार्क में ले गए।

(घ) बच्चे बहुत देर तक उसे तैरते हुए देखते रहे।

3. **सही विकल्प–**

(क) (ii), (ख) (i), (ग) (ii), (घ) (iv)।

4. **पंक्ति पूर्ति–**

(क) मीरा, (ख) लोई, (ग) कसौटी, (घ) बस्ती, (ड़) उतरकर।

5. **विलोम शब्द–**

निराशा	आशा
सजीव	निर्जीव
धूप	छाँव
परिचित	अपरिचित
अशुभ	शुभ

अज्ञान — ज्ञान
मौन — वाचाल
दुर्गम — सुगम

6. **अनेक शब्दों के लिए एक शब्द–**
(क) कवि
(ख) चित्रकार
(ग) दंगाई
(घ) परोपकारी

7. (क) रीना चावल पकाएगी।
(ख) श्रेयांश विद्यालय जाएगा।
(ग) रवीना दूध पिएगी।
(घ) अंजू पढ़ेगी।
(ङ) अमृतांश कल बाजार जाएगा।

8. **पर्यायवाची–**
फूल – पुष्प, सुमन, प्रसून।
तलवार – असि, कृपाण, शमशीर।
जगत – संसार, विश्व, दुनिया।
किसान – कृषक, हलधर, काश्तकार।
मुल्क – देश, वतन, राष्ट्र।

जाँच प्रश्न-पत्र-2

1. **प्रश्नों के उत्तर–**
(क) सर्पों के लिपटे रहने पर भी चंदन में विष नहीं समाता है।
(ख) लेखक के कुछ साथी भारी शरीर के थे इसलिए वैष्णो देवी नहीं जाना चाहते थे।
(ग) किन्नौर का मुख्य लोक नृत्य 'कयांग' है।
(घ) विद्यालय में प्रार्थना की घंटी बजने पर सोना मैदान में पहुँच जाती थी।
(ङ) वायु को प्रदूषित करने में मानव सबसे आगे है। वायु प्रदूषण मुख्य रूप से वाहनों के धुएँ, औद्योगिक उत्सर्जन, निर्माण, धूल और कृषि अवशेष जलाने के कारण होता है। इसे रोकने के लिए इलेक्ट्रिक वाहनों का उपयोग, अधिक पेड़ लगाना, सार्वजनिक परिवहन को बढ़ावा देना और उद्योगों में फिल्टर का उपयोग जैसे उपाय अत्यन्त आवश्यक हैं।

2. **संदर्भ** – यह पंक्तियाँ सोहनलाल द्विवेदी द्वारा रचित 'कोशिश करने वालों की हार नहीं होती' कविता से ली गयी हैं।
प्रसंग – यह पंक्तियाँ संघर्ष, असफलता से न डरने और लगातार मेहनत करने के लिए प्रेरित करती हैं।
व्याख्या – कवि कहता है कि असफलता जीवन का अंत नहीं है, बल्कि यह एक चुनौती है। जब असफल हों तो आत्मचिंतन करें कि प्रयास में क्या गलती रह गई। अपनी गलतियों को पहचानें और सुधार करें। कवि आगे कहता है कि सफलता मिलने तक आराम और नींद त्याग दें। पूरी तरह से लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए समर्पित हो जाएँ। कठिनाइयों से हारकर मेहनत करना न छोड़ें। सफलता के लिए संघर्ष करना अनिवार्य है। दुनिया में बिना मेहनत किए किसी की सराहना नहीं होती। जो व्यक्ति लगातार प्रयास (कोशिश) करता है, उसे अंततः सफलता मिलती ही है, इसलिए उसकी कभी हार नहीं होती।

3. **सही विकल्प–**
(क) (i), (ख) (ii), (ग) (i), (घ) (iv)।

4. **सही-गलत–**
(क) (✓), (ख) (✓), (ग) (✗), (घ) (✗)।

5. **विग्रह पदों का समास–**
(क) पाठशाला (तत्पुरुष समास)
(ख) रसोईघर (तत्पुरुष समास)
(ग) हाथ-घड़ी (तत्पुरुष समास)
(घ) गुरु दक्षिणा (तत्पुरुष समास)

6. कवयित्री, अध्यक्ष, अनोखा, ज्ञानवान, चूहा, भक्त।

7. एकैक, तथैव, जलौध, महौषध।

8. घबराहट, तैराक, असफलता, लालिमा, रंगीला, सपेरा, साप्ताहिक, आदमियत।

9. (क) कमल, ककड़ी, कल, मल, कड़ी, मकड़ी।
(ख) जरा, हल, मल, राम, राज, महल।

●●